❀ श्री सद्गुरवे नमः ❀

* अथ *

मुक्तावली गारी

❀ जिसमें ❀

सत्योपदेश गूढ़ शब्दों का अर्थ सहित रहस्य धारण करने के लिये प्रमाण सहित खण्डन मण्डन नीर क्षीर का निवेरा सत्य सागर जीव ही में ज्ञानरूपी धीव शीव पीत परमेश्वर को निज हृदय में विवेक रूपी नेत्र से देखने में शान्तिप्रद मुक्ती है।

एक कबीर पंथी साधु

रामलाल दास द्वारा निर्मित।

प्रकाशक फर्म—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

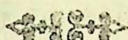
राजादरवाजा, वाराणसी—१

पांचवा संस्करण

मूल्य रु०४/

❋ श्री सद्गुरवे नमः ❋

❋ मुक्तावली गारी ❋



जिसमें संतों के बनाये हुए सुन्दर सुन्दर गारी, भजन, कीर्तन, चौताल, कजरी, दादरादि हैं। कबीर साहेब व रामचन्द्र के कहे हुए गूढ़ रहस्य अर्थ सहित वर्णन।



एक कबीर पन्थी साधु

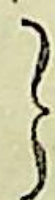
रामलाल दास द्वारा निर्मित



प्रकाशक—फर्म

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी।

पाँचवाँ संस्करण  वि०सं० २०३३ ई० सन् १९७६

* श्री सद्गुरवे नमः *

भूमिका

प्रिय पाठक गण तथा महात्माओं को मालूम हो कि इस मुक्तावली गारी नामक ग्रन्थ में निर्पक्ष न्याय प्रमाण सहित स्वरूप बोध के लिये मन चित्त को प्रसन्नता पूर्वक नीर क्षीर का निर्णय गान करके गुण ग्रहण कर मुक्त हो सकते हैं। सज्जन व पतिव्रता स्त्रियों के लिये सुन्दर २ गारी वर्णन हैं और कबीर साहेब व रामचन्द्र के कहे हुये गूढ़ रहस्य धारण करने के लिये प्रश्न उत्तर सहित गारी भजन वर्णन है। और सज्जन साठिका, साठि चौपाई बोध वनचासिका वनचास चौपाई, पूनम प्रकाशिका पन्द्रह चौपाई यह तीनों १२४ चौपाई में है। सन्तों के बनाये हुये सत्योपदेश सौ दोहा में है भजन चौताल कजरी ग़ज़ल कीर्तन छन्द दादरादि इसमें है अर्थ टिप्पणी में खोल दिया गया है इस पर शङ्का रहने पर पारखी सन्तों के सत्सङ्ग में समझने बुझने पर व जैसा २ जिसका शुभ संस्कार व अपने २ बुद्धि के अनुसार ठीक २ यथार्थ बोध जैसा का तैसा हो सकता है यों तो मसला ठीक ही है (जटा धारी मठा धारी ॥ खोपड़ी खोपड़ी गति न्यारी) सर्व पारखी सन्तों से अन्तिम विनय यही है कि जो कुछ त्रुटि दृष्टि गोचर हो उसे पाठक गण सुधार के पढ़ गुण ग्रहण कर लेवें तब गुण ग्राहियों का कल्याण होगा।

वि० सम्वत २०२२
ता० ११-८-सन् १९६५ ई०

सर्वपारखी सन्तों का चरण रज
एक कबीर पन्थी साधु
राम लाल दास

250

❁ मुक्तावली गारी ❁

❁ १-श्रीसद्गुरू पद बन्दना ❁

श्री सद् गुरू के पद कमल बन्दन करूँ कर जोड़ के ॥
तजि बिबिध कर्म बिरुद्ध धर्महिं कल्पना मन मोड़ के ॥ १
गहि परख पद गुरु शरण सङ्गति, बासना नहिं लेश है ॥
गुरु भक्ति से निज मुक्त ह्वै, प्रत्यक्ष पारख देश है ॥ २
गुरु ब्रह्म मुख अरु जीव माया, सार मुख निरुवारिये ॥
ज़र[1] ज़न[2] जमीनय तन तनय[3], अध्यास जल्द निकारिये ॥ ३
निज स्वार्थ हित प्रीति करत, तिन से सदा मुख मोरिये ॥
तजि कुसङ्ग कुबासना, सत्सङ्ग में चित जोरिये ॥ ४
गारी सरल बर्णन करूँ, अब मोक्ष के हित जान कर ॥
पूरण करो हे सद् गुरु, निज दास किङ्कर मान कर ॥ ५
सन्त जितने पारखी, उन से बिनय है आज यह ॥
शोधन व साधन पूर्ण होवे, जीव सुधरे काज यह ॥ ६
अनुमान बाणी पक्ष तजि, निर्पक्ष ह्वै शरणे गया ॥
बोध दे निज रूप की, मुर्दा सकल जड़ नहिं दया ॥ ७
गुरु मन्त्र है प्रत्यक्ष पारख, भूल भ्रम उड़ावनं ॥
राम लाल यह विनय गुरु पद, जियत मुक्ती पावनं ॥ ८

(२-भजन)

रहनी बिन भेष दिवाना है ॥ टेक ॥ जब लग रहनि गहनि

टिप्पणी—१—ज़र कहिये सोना चाँदी। २—जन कहिये स्त्री।
३—तनय कहिये पुत्र।

499

नहिं आवे, तब लग फिरत भुलाना है ॥ रहनी ॥ १ ॥ जब उर रहनि गहनि बनि आवे, तासे काल डेराना है ॥ रहनी ॥ २ ॥ गूलरि फूल[1] सबै कोई चाहै, जिन पावा तिन जाना है ॥ रहनी ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर निज पद पर ठहरो, सद्‌गुरु चरण ठिकाना है ॥ रहनी ॥ ४ ॥ निजस्वरूप राम को गूलरि फूल कहते हैं

दोहा—चारिउ साधन न किया, किया न निज पद जाप ।
बीच महन्ती हो गई, पूर्व जनम के पाप ॥

विवेक, वैराग्य, षटसम्पति, मुमुक्षत्व यही चार साधन हैं

(३—शब्द)

दुनियाँ ठगि ठगि खायो, पुजाय पथरा ॥ टेक ॥ लहसुन पियाज में दोष लगावैं, मछली में पण्डित बटावैं बखरा ॥ दुनियाँ ॥ १ ॥ चूरा, दही खाय लिहिन, पूरी गठियाय लिहिन, दक्षिणा के दाईं मचावै झगरा ॥ दुनियाँ ॥ २ ॥ सन्त के प्रसादी में छूत लगावै, गेजुवा के हाड़ मुँह पर रगरा ॥ दुनियाँ ॥ ३ ॥ गेजुवा के हाड़े क सङ्ख बतावै, पथरे कै नाम सालिक राम धरा ॥ दुनियाँ ॥ ४ ॥ पितरी कै मूरति भगवान बतावै, लेहँगा ओढ़नी सिङ्गार धरा ॥ दुनियाँ ॥५॥ पाथर धोय प्रसाद बनावें उसका नाम चरणामृत धरा ॥ दुनिया ॥ ६ ॥ सत सङ्गति मा चित न लागै, जड़ चेतन एकयम गबड़ा ॥ दुनियाँ ॥ ७ ॥ खटर खटर माला फेरै और करै नक जपना ॥ ठाकुर आगे भोग लगावें, गपक लेंय सब अपना ॥ दुनियाँ ॥ ८ ॥ कथा सुनावें,

भागवत सुनावैं, और छुवावैं वछिया॥ठाकुर आगे हाथ जोड़ावैं, पइहौं नाहीं छुवाठिया॥ दुनियाँ॥ कहहिं कबीर सुनो हो पण्डित भ्रम भूल में दिन गुजारा॥ नर तन पाय उपकार न कीन्हो चौरासी में जम कचरा॥ दुनियाँ॥ १०॥

चौपाई ज्ञानगुदणी व रामायण उत्तरकाण्ड दोहा—१६२

सुमति क्षुधा बाढ़ै नित नई। विषय आश दुर्बलता गई॥
सुमति के साबुन सिरजन धोई। कुमति मैल का डारो खोई॥

(४–गारी)

भारत में वे धन्य साधु हैं, सुमति के भूषण धारी जी ॥१॥
ऐश्वर्य के भूषण सोना सज्जन, टूटि जुटैं सौ वारी जी ॥२॥
वीरता के भूषण संयम से बोले, रिपु कामादि पछारी जी ॥३॥
ज्ञान के भूषण शान्ती शम दम, नर समाज को तारी जी ॥४॥
परिवार के भूषन विनय नम्रता, शिर के पाप उतारी जी ॥५॥
धन के भूषण दान सुपात्रहिं, बाढ़े चीर के ढेरी जी ॥६॥
तप के भूषण क्रोध न करना, छाती जलै नहिं तेरी जी ॥७॥
रानी सुन्दरी भक्ती कीन्हो, पति अपने उबारी जी ॥८॥
बलवान के भूषण क्षमा सत्य है, कीन्हे अमल सुखारी जी ॥९॥
धरम के भूषण है निष्कामी, जीवन्मुक्ति कहाई जी ॥१०॥
गहि सुशील सब सुन्दर भूषण, निज स्वरूप ठहराई जी ॥११॥
रामलाल गुरु पारख पाये, खानि वाणि भहराई जी ॥१२॥

(५–गारी)

पतिव्रता के लक्षण सुनि गुण धारो, सुख सम्पति भरपूरी जी ॥१

मन्त्री समान[१] सलाह उचित दे, कार्य किये दुख दूरी जी ॥२
दासी समान आराम जो देती, चित चञ्चल की तूरी जी ॥३
माता समान ध्यान जो रखती, भोजन कराय मन पूरी जी ॥४
रम्भा समान सुक्ख जो देती, शयन समय दिल[२] जोरी जी ॥५
धर्म कार्य में रहती हमेशा, पति अनुकूल हजूरी जी ॥६
पृथ्वी समान क्षमा जो रखती, सहन[३] शील से प्यारी जी ॥७
छाया[४] की भाँति रहै पत्नी संग, पति के साथ करारी जी ॥८

टिप्पणी २-दोहा-सचिव वैद्य गुरु तीन जो, प्रिय बोलै भय आश। राज धर्म तन तीनि कर, होय बेगही नाश॥ रामायण सुन्दर काण्ड दोहा-३६॥ २—अपने जीव ऐसा पराया जीव समझना यही दिल-जोरना है। ३—बनवास के समय सीताजी के जाँघ पर शिर धरे श्रीरामजी सोते थे, इन्द्र का बेटा जयन्ता कौआ (काक) का रूप धर के सीता जी के स्तन पर चोंच मारा खून बहकर राम जी के शिर पड़ा तब राम जी जागे और सींक का बान मारे और शरण में लौट आने पर भी जयन्ता का आख फोर दिया. मगर सीता जी खून के बहने पर भी जाँघ को न हटाई कि राम जी जाग जायँगे तो नींद खराब हो जायगा यह सहनशील क्षमा का लक्षण सीता में होने से उनका नाम आज तक विदित है। ४—दोहा-रामायण बालकाण्ड—गिरा अर्थ जल बीच सम, कहिअत भिन्न न भिन्न। बन्दौं सीता राम पद जिन्हैं परम प्रिय खिन्द। अर्थ—जिस प्रकार शब्द में अर्थ है, उसी प्रकार सीता राम स्त्री पुरुष दो नहीं, सीता सत्य रूपी चेतन में ज्ञान रूपी राम दो नहीं एक ही है जैसे सूर्य और सूर्य का प्रकाश तीन काल में अलग नहीं हो सकता ऐसा जानिये। सीता जो राम जी से कहती हैं कि आप अपना प्रछाहीं यहीं छोड़ कर बनवास जाइये क्योंकि पुरुष के प्रछाहीं स्त्री हैं चन्द्रमा अपना शीतलताई, सूर्य अपना प्रकाश नहीं छोड़ता तो हमको आप अकेली क्यों छोड़े जाते

शीतल चन्द्र तजे नहिं कबहीं, मेरे लिये इनकारी जी ॥९
सूर्य प्रकाश तजैं नहीं कबहीं, कैसे तजो पिया पियारी जी ॥१०
जीव बिन देह नदी बिन वारी[1], तैसे पुरुष बिन नारी जी ॥११
पतिव्रता के भूषण लज्जा[2] जानो, साहस[3] शान्ति उबारी जी ॥१२
गुरु कबीर के वचन मानि चलु, यही सेवा बहु भारी जी ॥१३
रामलाल यह गारी गावें, सुनि सखिये गुण धारी जी ॥१४
गारी गावै परम पद पावै, सद्गुरु की बलिहारी जी ॥१५

चौपाई ।

भोजन वस्त्र व विद्या दान । मुख्य यही तीनों प्रधान ॥
करे करावें नर व नारी । सुखी सुमति से दुनियाँ सारी ॥

(६—गारी)

राम अनन्त अनादि हैं सन्तों, भाँति अनेन देखाई जी ॥१
लक्ष्मण पूछैं अपने राम से, नरक स्वर्ग केहिं ठाईं जी ॥२
भक्ती माया ज्ञान के लक्षण, हमैं देव दरशाई जी ॥३
ईश्वर जीव में भेद है कितना, क्या वैराग्य कहाई जी ॥४
तीरथ व्रत व दान तपस्या, कहो भेद अरथाई जी ॥५
साँच झूँठ कै निर्णय जाने, मन को शान्ति मिल जाई जी ॥६
राम कहैं सुन भइया लक्ष्मण, थोरे में देऊँ बुझाई जी ॥७

हो, इसका उत्तर न होने से राम जी साथ ले गये सत्यरूपी चेतन में लक्ष लगने से लक्ष्मण जानिये ।

टिप्पणी—१-पानो । २—हरेक बुराइयों से रहित होने का नाम लज्जा है घूँघट काढ़ने का नाम लज्जा नहीं । ३-साहस कहिये हिम्मत ।

तृष्णा त्याग स्वर्ग सुख जग में, नरक देह दुख दाई जी ॥८
जीव दया सन्तन सेवकाई, भक्त मुक्त निज पाई जी ॥९
गो गोचर मन जहँ लग जावे, सो सब माया बताई जी ॥१०
निज स्वरूप पहिचान बतावे, ज्ञानी सोई कहाई जी ॥११
बन्ध दशा में जीव कहावे, मोक्ष दशा शीव[1] पाई जी ॥१२
तृण सम सिद्ध तीन गुण त्यागै, सोई वैराग्य कहाई जी ॥१३
निज मन शुद्ध भया विषयन से, तीरथ परम है भाई जी ॥१४
सत्य समान व्रत नहिं दूजा, भक्त[2] दान सुख दाई जी ॥१५
भोग विषय से रहति होय जब, साँच तपस्या पाई जी ॥१६
साँच जीव से भागा फिरै नर, झूठे[3] से प्रीति लगाई जी ॥१७॥
राम लाल-यह गारी गावें, सुनो भक्त मन लाई जी ॥१८

(७-गारी)

अपने राम से लक्ष्मण पूछै, कर जोरे शिर नाई जी ॥१
अन्धकार के द्वार कौन हैं, मोक्ष मार्ग केहि ठाईं जी ॥२
भूत कहाँ है धाम कहाँ है, मात पिता कहाँ पाई जी ॥३
कौन शत्रु है कौन मित्र है, को यम जाल कहाई जी ॥४
महावीर को पण्डित जग में, भवसागर केहिं ठाईं जी ॥५

टिप्पणी-१—नौकाल के बासना बन्धनों से रहित हुआ जीव, शीव हो गया यानी कल्याण स्वरूप हुआ, मोह का क्षय करने का नाम मोक्ष है। २—भक्ती रूपी दान जो देता है वही दानी निष्कामी सद्गुरु है। ३—अद्वैत ब्रह्म ईश्वर अवस्तु अनुमान तथा अनेक देवी देवादि जड़ मुर्दा को पूजने पुकारने का नाम झूँठ से प्रीति लगाना है

को है धनी रङ्क को जग में, मौनी कौन है भाई जी ॥ ६
तीन भाँति की पूजा कौन है, हमैं देव दरसाई जी ॥ ७
राम कहैं सुनो भइया लक्ष्मण, अन्धकार एक नारी[१] जी ॥ ८
मोक्ष चहो तौ निजको समझो, करो सत्सङ्ग विचारी जी ॥ ९
जहाँ भय भरम भूत है तहवाँ, धीरज धाम बताई जी ॥ १०
पिता विवेक सुमति सोइ माता, गुरु ने यही लखाई जी ॥ ११
शत्रु वही निज इन्द्रिये मिताई, धरम मित्र है भाई जी ॥ १२
तामस मोह जिन्है को घेरे, सोई यम जाल कहाई जी ॥ १३
तामस महादेव को जानो, मोह में राम फँसाई जी ॥ १४
महावीर जो मन को जीते, ज्ञान राम सुखदाई जी ॥ १५
भूल भरम भवसागर जानो, सद्गुरु पार लगाई जी ॥ १६
धनी वही सब विधि सन्तोषे, तृष्णा रङ्क कराई जी ॥ १७
उत्तम[२] आतम मध्यम साधू[३], प्रतिमा कनिष्ट पुजाई जी ॥ १८
मौनी वही विचार से बोले, भेद भाव मिट जाई जी ॥ १९
निज स्वरूप पर लक्ष्य लगाये, लक्ष्मण मित्र भलाई जी ॥ २०
जीव उबारन गारी गावें, राम लाल समुझाई जी ॥ २१

(८) प्रश्नः—ज्ञान, ध्यान, स्नान, शौच किसे कहते हैं ?

टिप्पणी-१ – नारी कहिये स्त्री नारी कहिये ब्रह्मा अमृतु बानी नौकाल की माया में फसना यही गर्भवास को भेजने वाली अंधकार कूप है। २—निज स्वरूप स्थिति उत्तम है। ३ – स्वरूप स्थिति के लिये मन को नौकाल की विषयों से हटाने का नाम साधू है।

उत्तर दोहा–पराया जीव समान निज, ताको कहिये ज्ञान।
मन विषयन से रहित जब, ताहिं समझलो ध्यान ॥१
पाप कर्म मन से तजै, ताहिं कहत स्नान।
जीभ लिङ्ग वश में करे, शौच क्रिया तेहिं जान ॥२

[९–गारी]

सुनो सखिया सहेलर, सुनो सखिया सहेलर षट् गुण धारो
सही रे सही ॥ १
सत्य माता को धारो, ज्ञान पिता को गही रे गही ॥ २
धर्म भ्राता को धारो, दाया सखा को लई रे लई ॥ ३
गहो शान्ती की दासी, बेटा क्षमा दुःख क्षई रे क्षई ॥ ४
छोड़ो खानी[1] व बानी[2], जीव जमा को गही रे गही ॥ ५
निज हृदय अविनाशी, नित्य अनन्त रही रे रही ॥ ६
गुरु पारख पाये, जनम मरण भव नहीं रे नहीं ॥ ७
यही धारण लाये, रामलाल को कही रे कही ॥ ८

[१०–झूलना]

(१०)–छः शास्त्र का मत सिद्धान्त न्यारे २ वर्णन।
मीमांसा वादी कहैं कर्महि सत्य है, वैसेसिक बादी समो गावता है।
न्याय वादी कर्तार माने, पाताँजली योग बखानता है।
सांख्य बादी नित्यानित्य कहे, बेदाँति ब्रह्म अनुमानता है
कहहिं कबीर ये द्वन्द चहुँ दिस मची, सो द्वन्दही को सब गावता है।

टिप्पणी १-मोटी माया स्त्री, पुत्र, धन। २-झींनी माया ईश्वर ब्रह्म देवादि

[११–गारी]

नृप दशरथ में चार क्रियायें, कौन कौन है स्वामी जी ॥ १
श्रद्धा[१] सेवा[२] भक्त[३] तपस्या[४], यह चारों क्रियायें जी ॥ २
चार क्रिया जब किये नृपति ने, कौन कौन फल पाये जी ॥ ३
मोक्ष काम धरमार्थ चार फल, यही नृपति ने पाये जी ॥ ४
क्रिया अवस्था में चार पुत्र हैं, कैसी सुमति बढ़ाये जी ॥ ५
फल के अवस्था में चार पतो हैं, यह दशरथ ने पाये जी ॥ ६
वस्तु अनित्य[५] में नेह लगाये, चौखानिन भरमाये जी ॥ ७
गुरु पद पाय निज पद अपनावे, जियत मुक्त कहलाये जी ॥ ८
भोग विषय से रहित होय जब, साँच तपस्या आये जी ॥ ९
ब्रह्म जगत दुइ धोखा छोड़ौ, जीव मोक्ष पद पाये जी ॥१०
दया दान उपकार करोगे, तब ही धर्म उर आये जी ॥११
धरम[६] के लक्षण दस को गहिये, जनम सफल हो जाये जी ॥१२
रामलाल निज गारी गावै, गुरु कबीर पद पाये जी ॥१३

टिप्पणी—१-गुरु के सत्य ज्ञान पर विश्वास रखना ही श्रद्धा है। २—पारखी सन्तों का आज्ञा पालन ही सेवा है। ३—पूज्य के विषय अनुराग होना ही भक्ति है। ४—मन बच कर्म से शुभाचरण करना ही तप है। ५-स्वरूप से पृथक, संजोग से बनी हुई पदार्थ सब अनित्य है। ६—श्लोक-धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम ॥ अर्थ—धैर्य, क्षमा रखना, मन को बुरे कर्मों से हटाना, चोरी न करना, शरीर को जल मिट्टी से, मन को सत्य से, बुद्धी को ज्ञान से, चैतन्य को काम क्रोधादि दोषों का त्याग, ६—दसों इन्द्रियों को अधर्म मार्ग से हटा कर सदैव धर्म मार्ग

[१२–गारी]

चित्त प्रसन्न के चार है साधन, सुनि लो कान लगाई जी ॥ १
करुणा[१] मुदिता[२] और उपेक्षा[३], मैत्री मित्र कराई जी ॥ २
चार प्रकार के नर दुनियाँ में, देखो ध्यान लगाई जी ॥ ३
सुखी दुखी पुण्यात्मा अधर्मी, हैं चारो जग माहीं जी ॥ ४
यथा योग्य व्यवहार करन से, चित्त प्रसन्न ह्वै जाई जी ॥ ५
सुखी नरों से प्रेम से बर्तो, दुखियों पर दया कराई जी ॥ ६
पवित्र नरों से हर्षित रहिये, हृदय शुद्ध ह्वै जाई जी ॥ ७
दुष्ट नरों से उदासीन रहि, प्रीति न वैर कराई जी ॥ ८
धीरज वन्त बली नर जग में, नारी[४] नेह हटाई जी ॥ ९
हिंसा रहित उपकार से मुक्ती, चोरी नशा भगाई जी ॥ १०
इस प्रकार व्यवहार करने से, मन को शांति मिलजाई जी ॥ ११
रामलाल गुरु पारख पाये, निज स्वरूप ठहराई जी ॥ १२

ही में लगाये रहना, ७—धी बुद्धी को अच्छे कर्मों में लगाना, ८—
सद्ग्रन्थों का यथार्थ सार ग्रहण करना, ९—सच बोलना, १०—अक्रो
रहना, यही दस लक्षण धर्म के हैं सो ग्रहण करना चाहिये ।

टिप्पणी—१—दया । २—हर्षित प्रसन्नता । ३—उदासीन या
दुष्टों से प्रीति न करै, न वैर करै । ४—नारी कहिये स्त्री मोटी माय
नारी कहिये झीनी माया अवस्तु अनुमान कल्पना वानी ब्रह्म ।

(१३-गारी)

छोड़ो अनुमति बाणी, छोड़ो अनुमति बाणी, गुरुमति परख
लखायो जी ॥ टेक ॥
छोड़ो कागा के बुद्धी, हंस गवन चलि आवो जी ॥ २
छोड़ो सकलो दुरमति, सुन्दर जनम बनावो जी ॥ ३
छोड़ो गृही गुरू को, त्यागी गुरू को बनावो जी ॥ ४
गुरु कामी को छोड़ो, लोभी गुरु को हटाओ जी ॥ ५
रुपया माँगै बिदाई, नाहीं मिले रिसयाय जी ॥ ६
घोड़ा भैंस हँकावैं, नाहीं मिले निहुराय जी ॥ ७
जैसे भैंस के थन में, जोंकि लगे दुखदाय जी ॥ ८
नारद गीता में देखो, कृष्ण दिये उपदेश जी ॥ ९
जैसे पाथर के नावा, लोहा के भार लदाव जी ॥ १०
ऐसे गृही गुरू हैं, बोरे नदी में दबाव जी ॥ ११
धारो साधु की सङ्गति, कोटि कटै अपराध जी ॥ १२
नौ[१] काल को छोड़ो, गुरु के लिये यही भार जी ॥ १३
गुरु ईश्वर ह्वैगे, ब्याह करैं तो निकारो जी ॥ १४
छोड़ो मन्त्र गायत्री, मुर्दा जपे नहिं पार जी ॥ १५
निन्दा जीव अविनाशी, पारख पद यहै सार जी ॥ १६
छोड़ो चोरी व हिंसा, पर नारिन व्यभिचार जी ॥ १७

टिप्पणी १—स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा।
कुटि कल्पना बाणी जाल, नौकाल हनि डारा ॥

छोड़ो गाली व निन्दा, झूठ वचन मद[१] मार जी ॥ १८
छोड़ो क्रोध व ईर्षा, मान करै छल छार जी ॥ १९
गहो दाया व धीरज, सत्य शील विचार जी ॥ २०
गुरु भक्ती को धारो, विरति विवेक उबार जी ॥ २१
सन्तोष के धारे, शान्ति आये सुख सार जी ॥ २२
गुरु पारख पाये, रामलाल भव पार जी ॥ २३

॥ १४—सज्जन साठिका प्रारम्भः ॥

दोहा—साहेब बन्दी छोर गुरु, सन्त शिरोमणि आप ।
जीव छोड़ायो बन्ध से, पारख के प्रताप ॥

चौपाई ।

साधु गुरू कब्बीर गोसाईं❀नमो नमो गुरु पद शिर नाईं ॥१
तिनको बन्दन करूँ कर जोरे❀करहु कृपा अघ रहै न मोरे ॥२
जीव बन्धे बहु बन्धन माहीं❀प्रमदा[२] बस दुःख छूटत नाहीं ॥३
आलस त्याग करैं सत्कर्मा❀सद्गुण गहे परे न भव मा ॥४
सत्य यथारथ है निज रूपा❀दूजा खोज भरम भव कूपा ॥५
वर्तमान सो बर्तो भाई❀भूत भविष्य सब देव बहाई ॥६
वर्तमान में चार पदारथ❀सुनि गुण गहो लखो परमारथ[३] ॥७
पहिले पदारथ निर्मल काया❀दूजे हो घर में कछु माया ॥

टिप्पणी १—धनमद, जोवनमद, स्त्रीमद, राजमद, विद्यामद, त[...] मद, सिद्धमद; ज्ञानमद । २—प्रमदा कहिये ज़वान स्त्री । ३—नौक[...] के परपञ्च से रहित निज स्वरूप ही परमार्थ है ।

तीजे हो कुलवन्ती नारी*चौथे सुत हो आज्ञा कारी ॥ ९
नारि पुरुष दोउ एकमत[1] होई*ताको धर्म डिगै नहिं कोई ॥ १०
चार पदारथ जाके होवे*गुरु भक्ती करि मुक्ती लेवे ॥ ११
चौबिस[2] गुरु दत्तात्रय कीन्हा*तजि अवगुण गुणसबकेलीन्हा॥ १२
जब तक गुरु न पावो साँचा*तब तक गुरू करो दस पाँचा॥ १३
जैसे ईख में है रस खोइया*धान में चावल भूसी पइया ॥ १४
तैसे खोंइया भूसि बहावो*रस चावल ले मीठा खावौ ॥ १६
चैतन्य चावल रस है ज्ञाना*सूर्य प्रकाश भिन्न नहिं जाना॥ १६
जीव गुणी गुण ज्ञान है सच्चा*देह गेह मानन्दी कच्चा ॥ १७
सकल वासना मन से जावे*सदाअसंगसद्गुरुमोहिभावे ॥ १८
सिंह साँप घर नहिं बनावेंबने* हुए घर में रह जावें ॥ १९
गुरु कबीर यस विचरे जाइ*देश विदेश में जायं चेताई ॥ २०
कोइ कोइ सन्त विवेकी आजू*निज सम जानि सुधारें काजू॥ २१

दोहा—साधु सिंह का एक मत, जीवत ही ले खायँ।
भाव हीन मृतक दशा, ताके निकट न जायँ ॥

गुरु कैसा अब करना चाही*सुनि गुण गहे बहे भव नाहीं ॥ २२
जीभ लिंग के स्वाद मिटावे*सो निज घर की राह बतावे॥ २३

टिप्पणी १-हरिश्चन्द्र के स्त्री पुत्र तीनों एक मत थे। २-दत्त्रात्रेई के चौबीस गुरु का नाम वर्णन=१-पृथ्वी २-जल ३-वायु ४-अग्नि ५-आकाश ६-चन्द्रमा ७-सूर्य ८-कपोत ९-अजगर १०-समुद्र ११-पतङ्ग १२-मधुमक्षिका १३-हाथी १४-शहद ले जाने वाला १५-हरिन १६-मीन, १७-पिङ्गला वेश्या, १८-चील्ह, १९-बालक, २०-कुमारी,

मदिरा माँस नशा न खावे❀चोरी हिंसा दूर बहावे ॥२४
नारि न परसै बिन्द संजोवे❀क्रोध कपट सब दिल से धोवे॥२५
अष्ट मदों¹ का मदिरा खोवे❀पाँच विषय तजि मुक्ती लेवे॥२६
निष्कामी गुरु कीजे भाई❀जासे आवा गवन नशाई॥२७
संयम² नियम³ के लक्षण पावो❀तेहिं गुरुको तब माथनवावो॥२८
मेला जाय न महन्त कहावे❀पूजा भेंट कभी न लावे ॥२९
परदा⁴ दूर करै आँखिन के❀निज स्वरूप दरशावें हिय के ॥३०
मानन्दी अनुमान हटावें❀भल भरम सकलो परखावें ॥३१
जोणू दाम जमीन के झगड़े❀फँसे नहीं तो गुरु है तगड़े ॥३२
ईश ब्रह्म ओ देवी देवा❀इन से रहित रहैं गुरु देवा ॥३३
तेहिं गुरु को शरणागत लीजे❀तन मन धन सब अर्पण कीजे ॥३४
चरण धोय चरणामृत पीजे❀भवन सिंचाय बन्दगी कीजे ॥३५
पुनि गुरु को भोजन करवावे❀सीत प्रसाद ताहिं को पावे ॥३६
सत्य ज्ञान प्रसादी अमृत❀धन्य भाग्य पायों सत सुकृत ॥३७

दोहा—सत्य गहे सुख ऊपजे, सुकृत गहे दुख जायँ ।
सत सुकृत प्रभु तव चरण, निशि दिन बन्दौ पायँ ॥

शौच सन्तोष ब्रह्मचर्य अमानी❀दया क्षमा गुरु भक्ती ठानी ॥३८

२१-जाला बनाने वाला, २२-सर्प, २३-मकड़ी, २४-भृङ्गी । १-(धन मद, स्त्री मद, राज मद, जवानी मद, विद्या मद, तप मद, सिद्ध मद ज्ञान मद) २-(सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, चोरी न करना, किसी प्रकार का दान नहीं लेना) ३-(कबीर साहेब के कहे गहे हुए रहस्य नियमों को पालन करना नियम है।) ४-अज्ञान, मल विक्षेप आवरण पञ्चक्लेश

गृही होय तो पाँच को सेवे * मात पिता गुरु अज्ञा लेवे ॥३९
नीति न्याय शिरधै मगु लागे * होय अनीति भरत¹ सम त्यागे ॥४०
सुख न देय तो दुख नहिं देवे * बैर भाव सब से नहिं लेवे ॥४१
दूजे विद्या सुतहि पढ़ावे * कन्या पढ़ै तो दुबिधा जावे ॥४२
तीजे पशु अपने जो होई * करि सेवा अपनो दुख खोई ॥४३
चौथे अतिथ साधु जो आवें * तन मन धन से सेवा लावें ॥४४
पंचम सेवा देश बिदेशा * तीन² गहे दुख मिटे हमेशा ॥४५
राम राज्य सुख चाहो भाई * दई³ के गहे न होय लड़ाई ॥४६
जनम मरण दुख छूटन चाहो * आदि अन्त बैराग्य निबाहो ॥४७
नारि पुरुष दुई देह न निरखो * तजिअवगुण निजरूपहिं परखो ॥४८
मुर्दा मन्त्र जाप न कीजे * हौं असङ्ग सद्गण मन दीजे ॥४९
दस इन्द्री पर मन है राजा * मन बस होय सिद्ध सब काजा ॥५०
मानन्दी सब नेह हटा कर * अमर जीव पर शान्ति रहाकर ॥५१
मन माला को फेरो भाई * निज स्वरूप आपुइ दरशाई ॥५२
पूजा ध्यान जाप यही सच्चा * देह गेह अनुमान है कच्चा ॥५३
अनेक नारि के चाम निहारे * जाति पाँति कछु नहीं बिचारे ॥५४
सो चमार निज रूप न जाने * गर्भवास दुःख सहित पछिताने ॥५५

टिप्पणी—१—भरत जी न्यायी होने से बड़े-भाई रामजी को ही राजगद्दी दिया, माता-पिता गुरु मंत्री के कहने से राजगद्दी नहीं लिया। २—सब स्त्री माता समान, पराया धन विष समान, पराया जीव अपने समान। ३—पराया धन विष समान, पराई स्त्री माता समान रामजी समझे या दुतिया रहित होने से लड़ाई रहित रामराज्य ही है।

चोरी नशा छिनारी करई * मार पीट पुनि जेल में परई ॥५६
जीव मारि के मांस जो खावे * हूँड़[1] देन चौरासी जावे ॥५७
वेद कुरान सन्त सब कहते * रहम बिना चौरासी परते ॥५८
जहाँ रहम वहाँ राम रहीमा * दिल दरगाह में बैठि करीमा ॥५९
चाह अचाह समझ लो प्यारे * रामलाल दो रूप[2] से न्यारे ॥६०

छन्द

साठिका सज्जन पढ़ै, नव नीति गीत बुझावहीं ।
ज्ञान भक्ति वैराग्य पूरण, मुक्त सन्त चेतावहीं ॥
जगत ब्रह्म असार जानत, शान्ति हैं निज रूपहीं ।
श्री लाल साहेब के चरण गहि, दास मुक्ती पावहीं ॥

(१५–बोध बनचासिका प्रारम्भ)

दोहा–बन्दौ सन्त समाज शुचि, सत्य कबीर गुरु देव ।
पूरण काशी लाल गुरु, सकल भ्रम कियो छेव ॥
बोध बनचासिका यह, आदि अन्त गहि लेव ।
गुण ग्राही ग्राजै सुखी, रहै न संशय भेव ॥

चौपाई

अ ! से अमल नशा सब छोड़ो * पाँच[3]मांस से मनको मोड़ो ॥१

१–बदला। २—बीज वृक्ष, स्त्री पुरुष, कारण कार्य, नाम रूप, राग द्वेष, स्थूल सूक्ष्म आदि ऐसे २ जोड़ा प्रवाह रूप अनादि होने से निज स्वरूप न्यारा है। ३—(१) जीव मार के मांस खाना, (२) कनक

आ ! से आदि अन्त तुम नाहीं *जगत ब्रह्म से भिन्न रहाहीं ॥२
इ! इस दुनियाँ में है नाहिं रहना*तजि कुसंग सत्संगति गहना ॥३
ई! ईश्वर कुछ चीज न जग में*निजको समझ न बूड़ो भग में ॥४
उ! से उत्कट वचन न वोलो*तौल हिय मुख बाहर खोलो ॥५
ऊ! से ऊसर खेत न बोओ*नृग[१] कृष्णदत्त[२] दशा लेवो ॥६
ए! से एक सन्त को सेवो*चौसाधन[३] गहि मुक्ती लेवो ॥७
ऐ! से ऐनक ज्ञान कबीरं*हिय में जीव अमर पर थीरं ॥८
ओ! ओम शब्द उच्चारण*शब्द में भूला आपुइ कारण ॥९
औ! से औरत में नर भूला*रावण सम सहि संशय शूला ॥१०
अं! अङ्गरखा देह व देही*निरख परख ले सद्गुरु सेही ॥११

( ) कामिनी का भोग, (४) वाणी जाल बीजक शब्द ८८ सावजन न होय भाई, सावज न होय, वाकी माँसु भखै सब कोय, (५) इच्छा, वासना आशा कल्पना नौकाल की जहाँ तक है यही पाँच माँस छोड़ने से जीवन्मुक्त है सो जानिये।

टिप्पणी—१-राजा नृग निगुणा अपना रहे, और निगुणा ब्राह्मण को दान दिया, तीसरे साधु का गौ कामधेनु जबरन लेकर वही गौ भूल से दोबारा दान किया यही चार पाप से राजानृग गिरगिट हुये। २—कृष्णदत्त ब्राह्मण राजा थे, अपने स्त्री सुन्दरी को मन्त्र लेने से तलवार लेकर मारने दौड़े, दूसरे अपने यज्ञ में भूखा साधु को भोजन नहीं दिया, तीसरे मन्त्र लेने के लिये गुरु नारद जी से कहा कि हम सरपक्ख छोड़ कर कातिक में मन्त्र लेने का वादा किया, चौथे निगुणा ब्रह्मण को दान दिया यही चार पाप से हाथी का जनम पाये यह दोनों राजा का दान ऊसर खेत में बो गया, साधु से मंत्र उपदेश न लिये तब गिरगिट और हाथी हुए सो जानिये। ३-विबेक, वैराग्य, षट सम्पत्ति, मुमुक्षत्व यही चौसाधन हैं।

अः ! अहमक चेत नदाना ❀हिये राम तजि चाम लोभाना ॥१२
क ! से कर्म सुधारो भाई ❀तुम पर कोई न ईश खुदाई ॥१३
ख ! से ख्वाहिस जल्द मिटावो❀निजपरशांतिभये सुखपावो ॥१४
ग ! से गम गुस्से को खाओ❀ क्षमा गङ्ग में पैठि नहाओ ॥१५
घ ! घर में घमण्ड मिटावो ❀दिल अन्दर दीदार को पावो ॥१६
ङ ! अङ्ग देह से न्यारा ❀जीव जनैया रूप तुम्हारा ॥१७
च ! से चरम दृष्टि जो आवे ❀सो सब माया जीव जनावे ॥१८
छ ! से छत्र पती तुम आपै❀ भूल से कोटिन तीरथ नापै॥१९
ज ! से जनम लिया नर तन से❀भागो नारी गुरुवाफन[१] से ॥२०
झ ! से झगड़ा मुख्य है तीना[२]❀गुरुसोई गुरु[३] पदमें लीना ॥२१
ञ ! से यान[४] ज्ञानपर चढ़िलो❀भूल भरम भवसागर तरलो ॥२२
ट ! से टारो सकलो दुरमति ❀तव ठहरो निज पद है गुरुमति॥२३
ठ ! से ठीक ठिकाना देही[५] ❀ देह गेह से मत कर नेही ॥२४
ड ! से डगर वही है अच्छा ❀गहि सद्गुण राखे निज लक्षा॥२५
ढ ! से ढाल गहो वैरागा ❀लोभ मोह मद दुश्मन भागा ॥२६
ण ! से अड़ा रहो निज पद में❀ दाँव न पावें दुश्मन घर में ॥२७
तसे तामस[६] तित्तिर मारो ❀ काम[७] कबूतर हिये न धारो ॥२८

टिप्पणी--गन्दा खानी बाणी जाल का। २-जोरू दाम जमीन, तत्त, त्वं, असि। ३-अपना स्वस्वरूप ही गुरु पद है। ४-यान कहिये जहाज। ५-देही कहिये चैतन्य जीव। ६-रावणादि तामसी नर। ७-दोहा-जहाँ राम तहाँ काम नहीं, जहाँ काम नहिं राम। दोनों कैसे पाइये, रवि रजनी एक ठाम॥

थ ! से थाती जिव शिव आपै * नाना मत पन्थन को थापै ॥२९
द ! से दया राखु दिल माहीं * बिना विचार दया न चाही ॥३०
ध ! से धर्मी* धरम कमावो * हरिश्चंद्र यस नाम चलावो ॥३१
न ! से नकल असल है पासै गुरु बिन मन्दिरमसजिददासै३२
प ! से पारख रूप तुम्हारा * सबको जाने सब से न्यारा ॥३३
फ ! से फकत फकीरी कर लो* सबसुखनिजमें जियतयतरलो॥३४
ब ! से बना चीज सब बिगरे* बिना बनाया जिव पर ठहरे ॥३५
भ ! से भजन वही नर करता*तजिबिषयनउपकारहि धरता ॥३६
म ! से मौत[1] निकट में देखो*सबघट रामकोनिजसमलेखो ॥३७
य ! से यती के चिन्ह लङ्गोटा*दाग न लागे सद्गुरु ओटा ॥३८
र ! से रात पदारथ नाहीं*ज्ञान भान सम आप रहाहीं ॥३९
ल ! से लालच छोड़यो नाहीं*बन्दर सम नाच्यो जगमाहीं ॥४०
व ! से वही सत्य के पाये*शान्ति भये फिर जग नहिंआये॥४१
श ! से शब्दी[2] शब्द बिचारा*सार[3]शब्द गहि उतरो पारा ॥४२
ष से षट[4] सम्पति को धारो*षट[5]बिकारतजिनिजको तारो ॥४३

टिप्पणी —*हे नर जीओ १—मौत निकट देखने से बुरा कर्म नहीं होगा। २—चैतन्य जीव। ३-सार शब्द निर्णय कर नामा॥ जासे होय जीव कर कामा॥ ४-दोहा--मन विषयन से रोकना, शम तेंहि कहत सुधीर। इन्द्री गण को रोकना, दम भासत बुद्ध धीर॥ सत्यज्ञान गुरु वाक्य है, श्रधता विश्वास। समाधान तेहिं जानिये, मल विक्षेपको नाश॥ स्त्री देखि गलानि हिय, यह उपराम बखान। भूख पियास दुख सहन करि, यही तितिक्षा जान॥ ५ - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर (ईर्षा)

स ! से समइक[1] ज्ञान सुकृती * जियत मुक्त अच्छी प्रकृती ॥४४
ह ! से हाकिम तुझ पर नाहीं*जीव अनन्त अखंड रहाहीं ॥४५
क्ष ! क्षमा छोड़ावे दुख से*सुमति सम्पदा बिलसौ सुखसे ॥४६
त्र । से त्रिगुण छोड़ अठारह[2]*रहिगा निजपद पारख सारा ॥४७
ज्ञ ! से ज्ञानिन में सिरताजा*गुरु कबीर यस बिरले आजा ॥४८
ऋ ! से ऋषि[3] मुनि ज्ञान कथे हैं*ईश ब्रह्म अनुमान नथे हैं ॥४९

दोहा—बोध बनचासिका के पढ़े, कढ़े होय निर्बन्ध।
संतन सङ्ग रहि बूझि लो, छूटि जाय संबंध ॥

(छन्द)

संबंध ही में मुक्त, बद्ध, प्रत्यक्ष ही सब देखता।
प्रत्यक्ष पारख रूप से, जड़ वस्तु सबही जानता ॥
चाहना ज्यों ज्यों बढ़ी, नाना कलायें ठानता।
चाहना सब घट गई, अपरोक्ष ही निज शेषता[4] ॥१॥
पंच[5] क्लेशों में फँसे थे, परोक्ष माया ईश का।
परखा दिये श्रीसद्गुरु, तब भार उतरा शीश का ॥
हंस का गुण जब लिया, तब काग बुद्धी ना टिका।
रामलाल निज को लखा, अक्षर कहा बनचासिका ॥२॥

१—सदा एक सम बुद्धि प्रकाशा। भाखे वचन न कल्पित आशा ॥
अस बिचार जेहि शिष्य घट आवा। सो गुण मानुष केर कहावा ॥
२—अठारह त्रिगुण के नाम व अर्थ गुरू चेला सम्बाद ग्रन्थ ७२२ पृष्ठ में देखिये। ३—अग्नि, आदित्य, अङ्गिरा, वायु यही चार-ऋषि हैं।
४—बाक़ी। ५—अविद्या, स्मिता राग, द्वेष अभिनिवेशः।

(१६—पूनम प्रकाशिका प्रारम्भः)

सोरठा—

विविध अवस्था काल, त्रिगुण माया के परे।
खानि वाणि को टाल, नमू नमू गुरु देव जू ॥ १ ॥

चौपाई—

परीवा पारख परम अनूपा❀जीव अनेक में सद्गुरु भूपा ॥ १
दुत्तिया दुबिधा दूरि बहावे❀सुमति सम्पदा रङ्क मिटावे ॥ २
तीजे त्रिगुण से है न्यारा❀निज[1] पर शान्ति भये भवपारा ॥ ३
चौथे चित चेतन पर ठहरे❀तब जानो जिव भव से उबरे ॥ ४
पंचये पाँच विषय को त्यागे❀करि सत्सङ्ग भरम सब भागे ॥ ५
छठयें क्षमा ढाल गहि हाथे❀वार न बेधे दुश्मन[2] साथे ॥ ६
सतयें सत्य[3] भूमिका भारी❀मन इन्द्री जड़ सृष्टि से न्यारी ॥ ७
अठयें अक्ल बड़ी है सबसे❀अजर अमर तु कम नहिं रब[4]से ॥ ८
नौमी नौ[5] में बोध न होवे❀उनसे दीक्षा मन्त्र न लेवे ॥ ९
दशमी दश इन्द्री वश राखे❀अभय असङ्ग अमी[6] रस चाखे ॥ १०
एकादशी ब्रत निज लक्षा❀ध्वंस वासना तब जिव स्वच्छा ॥ ११
द्वादश मन्त्र शब्दसबअटके❀मन्त्री[7] गहे तो छूटे खटके ॥ १२
तेरस त्यागे सकलो आशा❀गर्भ बास नहिं पावे बासा ॥ १३

टिप्पणी-१- अपने ज्ञान स्वरूप। २-दुश्मन कहिये काम क्रोधादि। ३-चैतन्यज्ञान स्वरूप ही सत्य है। ४-रब कहिये खुदा। ५-पाँच तत्व तीन गुण को जनैया जीव नौ है। ६-अमर जीव ही में ज्ञान रस है। ७-चैतन्य जीव ही मन्त्री है।

चौदसचौदह[१] देवहैं तनपर॥तीन[२] देह तजि ठहरो निजपर ॥१४
पूनम पूरण[३] लखुदिलमाहीं॥राम लाल जागे[४] जग नाहीं ॥१५
दोहा—यह पूनम प्रकाशिका, थोरे में कहि दीन।
समुझि गहे सुख शान्ति प्रद, दुख नाशो भ्रम छीन ॥

छन्द

श्री सद्गुरु शिर मौर बन्दी छोर, पद बन्दन करूँ।
त्रय ताप नाशक निज प्रकाशक, आप के चरणन परूँ ॥
एकान्त बासी जग उदासी, चाह अग्नी नहिं जरूँ।
सद् रहस्य पूरण धारि के, यहि मरन से फिर नहिं मरूँ ॥

[१७—कँहरा]

आज लागी है बजरिया ज्ञान साबुन की ॥ टेक ॥ सत्सङ्ग बजार से साबुन लायो, श्रधा खर्च लियो दामन की ॥ आज ॥

टिप्पणी-१- मन के देवता चन्द्रमा, बुद्धि का देवता ब्रह्मा, चित्त का देवता वासदेव नारायण, अहंकार का देवता रुद्र, कान का देवता दिशा, नाक का देवता अश्विनीकुमार, नेत्र का देवता सूर्य, जिभ्या का देवता वरुण, त्वचा का देवता वायु, हाथ का देवता इन्द्र, पाँव का देवता बामन औतार, मुख का देवता अग्नि, गुदा का देवता यम, १४ लिङ्ग का देवता प्रजापति। स्थूल सूक्ष्म इन्द्रियों पर गुरुवा लोग १४ देवता माने हैं सो भ्रमिक हैं जीव बिना सब जड़ मुर्दा जानिये। २-तीन देह कहिये स्त्री पुरुष नपुंसक (हिजड़ा) ३-अपना चैतन्य जीव ही पूरण है और सबमें घाटि वाढ़ि होती है जो जानिये। ४-रामायण अयोध्याकाण्ड दोहा ८६-जानिये तबहि जीव जग जागा। जब सब विषय बिलास बिरागा।

॥ १ ॥ काया चुन्दरी में दाग परी है, दाग छोड़ावे त्रय[1] तापन की ॥ आज ॥ २ ॥ जल विचार से धोवन लागे, मैल छुटै लागे पापन की ॥ आज ॥ ३ ॥ सेवा भक्ती के रीठा लगायो, मैल गिरै लागे ऊनन की ॥ आज ॥ ४ ॥ तप[2] के धूप में झुरवन लागे, जड़ता जाड़ गयो राजन की ॥ आज ॥५॥ रामलाल गुरु संत शरण रहि, बूझि लख्यो निज रूपन की ॥ आज ॥६॥

(१८)दोहा–अण्डा रहा तब बोलता, बच्चा बोलत नाहिं ।

तीन लोक संशय भई, पण्डिय की गमनाहिं ॥ १ ॥

अर्थ–अण्डा कहिये अज्ञान दशा में जब यह जीव नर शरीर में था तब तक यह बोलता था कि एक, अण्ड ओंकार से सब जग भया पसार । कहहिं कबीर सब नारि राम की अविचल पुरुष भतार ॥ सद्गुरु श्री कबीर साहेब कहते हैं कि रजोगुणी ब्रह्मा, तमोगुणी शंकर, सतोगुणी विष्णु यही तीन प्रकार के मनुष्यों को संशय भई तब अनुमान कल्पना से कहते हैं कि हमारा भतार कोई एक ओंकार राम रहीम है इसलिये अज्ञान दशा में अनुमान कल्पना के सब नारी बने और जब पारखी सन्त मिल गये तब हृदय निवासी राम जीव अविनाशी को प्रत्यक्ष ही लखा दिया तब बिचार रूपी बच्चा कल्पना रूपी वाणी नहीं बोलता यानी निज स्वरूप पर शान्ति स्थित हुआ भूल भ्रम मिट गई ।

टिप्पणी–१–तीन ताप कहिये दैहिक, दैविक, भौतिक । २–विषय भोगों से रहित होने का नाम तप है ।

(१६-ज्ञान दादरा)

करो गुरु भक्ती से मुक्ती लेव ॥ टेक ॥

खानि वाणि दुइ धार बहत है, भरम[१] की नाव चढ्यो। बिन मल्लाह पार न होइहौ, साँचा सद्गुरु खेव ॥ करो ॥ १ ॥ जीव दया सन्तन सेवकाई, छल बल[२] सकल दुरेउ। हिंसा नशा लबारी छोड़ो, सत्संगति चित देव ॥ करो ॥२॥ हृदय निवासी द्रष्टा चेतन, और न दूसर केव। वर्तमान में मिलै सो वर्तो, भूत भविष्य बहेव ॥करो॥३॥ वचन सत्य हितकारी बोलो, पक्ष पात नहिं लेव। निर्पक्ष न्याय पारख पर ठहरो, जनम मरण कर छेव ॥ करो ॥ ४ ॥ पच्चीस[३] प्रकृत दस[४] इन्द्री जानो, हंस देह लखि लेव। इनसे भिन्न स्वरूप आपनो, गुरु कबीर पद

टिप्पणी-१—कर्म; योग उपासना, ज्ञान, विज्ञान में फँसाने वाले गुरुओं का नाव का भ्रमिक है यानी गर्भ वास में डुबो देनेवाली है। २-अष्टमदों का नाम बल है। ३-पच्चीस प्रकृत के नाम वर्णन दोहा-काम क्रोध अरु लोभ है, भय व मोह सह भाग। नभ को पाँचों जानियै, नहिं चित में कछु लाग ॥१॥ बल करना अरु धावना, उठता अरु संकोच। देह बढ़े सो जानिय, वायु तत्त्व हैं सोच ॥ २ ॥ निद्रा मैथुन आलकस, भूख प्यास जो होय। ये पाँचों प्रकृति कही, अग्नि तत्व सो जोय ॥ ३ ॥ रक्त विन्द कफ तीसरी मूत्र, पसीना जान। ये पाँचों प्रकृत जो, पानी सो पहचान ॥ ४ ॥ चाम हाड़ नाड़ी कहीं, रोम जान अरु मांस। ये पृथ्वी प्रकृत हैं, अन्त सबन को नास ॥ ५ ॥ ४-दस इन्द्री के नाम "त्वचा चक्षु नासिका कर्ण + जिह्वा सहित ज्ञानिये वर्ण" हाथ-पांव मुखलिंग गुदाहू + पाँच कर्म इन्द्री मन लाहू ॥ ५-पच्चीस प्रकृत पक्की घोर गुण वर्णन = धैर्य दया शील विचार सत्य पाँचों के पांच २ प्रकृत बतलाता हूँ।

सेव ॥ करो ॥ ५ ॥ नौकाल[१] छोड़ि नौ[२] गुण को धारो, राखि न रञ्चक भेव । राम लाल हित मानि आपनो, पारख भूमि समेव ॥ करो ॥ ६ ॥

१—धैर्य = झूठ न बोलना, सत्य ग्रहण करना, भय रहित होना, अचल होना, अहंकार का नाश करना ।

२—दया = अद्रोह, समता, मैत्री, निर्भयता, सम दर्शिता ।

३—शील = क्षुधा निवारण, प्रिय वचन, शान्ति बुद्धि, प्रत्यक्ष पारख, प्रत्यक्ष सुख ।

४—बिचार = आस्ति नास्ति पद का निर्णय करना, यथार्थ ग्रहण करना, व्यवहार शुद्ध रखना, शुद्ध भाव रखना, सञ्चित करना, ज्ञान बिज्ञान को प्राप्त करना अर्थात् जानना ।

५—सत्य = निर्णय, निर्बन्ध, प्रकाश, स्थिरता, क्षमा (पक्की तत्त्व के तीन गुण) विवेक, वैराग्य, गुरु भक्ति (साधु भाव बोध भाव) बिचार और दया से बिवेक की उत्पति, सत्य और शील से गुरु भक्ति की उत्पति, धैर्य से वैराग्य की उत्पति । इन सबों को ग्रहण करना चाहिये । हंस देह पक्की देह नर देह और मनुष्य देह ये चार चारों देह नहीं एक ही देह है ।

(२०) प्रश्न—कर्म उपासना, योग, ज्ञान, बिज्ञान में फँसाने वाले गुरुवों का जनम कहाँ कहाँ होता है ?

टिप्पणी १—स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा । कुटि कल्पना वाणी जाल, नौकाल हनि डारा । २—दया धैर्य सत्य शील ले, विवेक वैराग्य बिचार । गुरू भक्ती औ सुमति से नौ गुण सब ख टार ॥

(उत्तर-२०-गज़ल)

मानुष तन पाय के पक्का न पाया भेद सत पद का। रहा जड़ भास में अटका गया फिर जहाँ से तू आया ॥ टेक ॥ कोई ओंकार अभ्यासी, पड़ा सो कर्म की फाँसी। वो अण्डज खानि की राशी, आश जहँ बास निज पाया ॥ मानुष ॥ १ ॥ कोई कर्ता खसम गावे, आप सखी भाव ठहरावे। सदा अल्पज्ञता भावे, वो ऊषमज खानि समाया ॥ मानुष ॥ २ ॥ शून्य अभ्यास में योगी, भया ब्रह्माण्ड का भोगी। वो आवरण आश से रोगी, वास जड़ खानि दुख पाया ॥ मानुष ॥ ३ ॥ जो साक्षी त्रिगुण आतम का, कहिये भास अन्तस का। जो अधिष्ठान चराचर का, सो पिन्डज खानि भरमाया ॥ मानुष ॥ ४ ॥ जहाँ मैं तू नहीं भासै, अवस्था ज्ञान गुण नाशे। जो जड़ विज्ञान माया से, अजगर केचु तन पाया ॥ मानुष ॥५॥ दास भागवत परख पाया, गुरू सन्तोष परखाया, भरम सब दूर सरकाया, चरण रज में स्थिति पाया ॥ मानुष ॥ ६ ॥

(२१-दादरा चेतावनी)

आये साधू बाबा आनन्द भये नगरी ॥ टेक ॥
पहिले सफाई तन[१] मन कीन्ह्यो, दूजे सफाई भई बखरी[२] ॥ आये १

टिप्पणी-१-तन वस्त्र इन्द्रियों की सफाई जल मिट्टी साबुन से मन की सफाई सत्य अहिंसा परोपकार से। २-झरोखेदार ऊँचे मकानों की चूसफाई ने मिट्टी से पोत कर हवनादि से शुद्ध करना चाहिए।

सन्त के आये शान्ति सुख जागे, भूल भरम फोरे गगरी ॥२
राम रमैया हृदय निज पायों, मोह मया की हटावें बदरी ॥३
गाँजा भाँग तमाल छोड़ायो, मदिरा माँस छोड़ायो सगरी ॥४
चोरी हिंसा लबारी छोड़ायो, दाया धरमकी लखायो डगरी ॥५
कल्पित बानी अध्यास छोड़ायो, पारख ज्ञान की पायों गठरी ॥६
गृही गुरु जड़ मुर्दा का छोड़ेऊँ, चेतन देव पुजायो अजरी ॥७
निर्णय न्याय निर्पक्ष बचन गहि, राम लालकी काज सुधरी ॥८
दोहा-पाहन को क्यों पूजिये, जो नहिं देय जवाब ।
अन्धा नर आशा मुखी, योंही होय खराब ॥

(२२-सवैया)

पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र, धरा धन धाम है बन्धन जीको ।
बारहिं बार विषय फल खात, अघात न जात सुधा रस फीको ॥
आन औ मान तजो अभिमान, कही सुन कान भजो सिय पीको ।
पाय परम पद हाथ सो जात, गई सो गई अब राख रही को ॥

(२३-भजन अध्धा)

बहावो मन मोटरी है जा फकीर ॥ टेक ॥ राम[१] जनक[२]
वैराग्य न लीन्ह्यो, यहि कारण रोयो नयनो नीर ॥बहावो ॥१॥
नर तन पाय वैराग्य सिधारो, मोह फाँस की कटिहै जंजीर ॥

टि० १-लक्ष्मणके शक्ती वाण लगाने व सीताहरण में राम वन० रोये ।
२-रामायण चौपाई—सिया बिलोकि धीरता भागी । रहे कहावत परम विरागी ॥ लीन्ह राउ उर लाय जानकी । मिटा महा मर्याद ज्ञान की ॥

बहावो ॥ २ ॥ गुरु पद पाय निज पद अपनावो, सत्सङ्गति में जागो बीर ॥ बहावो ॥ ३ ॥ ये मन राजा के दुइ मेहररुवै, ले निवृति[१] से लागो तीर ॥ बहावो ॥ ४ ॥ प्रवृती[२] नारि के फौज सम्हारो, काम क्रोध नहिं धरिहैं धीर ॥ बहावो ॥ ५ ॥ मात पिता गुरु सन्त न पूजेव, मुर्दा[३] का देवें मिठाई खीर ॥ बहावो ॥ ६ ॥ गुरु कबीर के सैन समुझि लखि, रामलाल निज ह्वै गे थीर ॥ बहावो ॥ ७ ॥

(२४-दादरा चेतावनी)

कौन विधि जाहु गे मियाँ मक्के ॥ टेक ॥ पाँच पचीस तीस हैं संग, इनका करो यक नक्के ॥ कौन ॥ १ ॥ काम बेहना जगत धुनि डारै, सुर नर मुनि सब थक्के ॥ कौन ॥ २ ॥ क्रोध पठान लोभ है सैय्यद, ये दो सिपाही बड़े पक्के ॥ कौन ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर नौ[४] नेह में फँस गयो, क्या होइहैं बहु बक्के ॥ कौन ॥ ४ ॥

१-क्षमा, सन्तोष, विवेकादि निवृती स्त्री के कुटुम्ब हैं। २-काम क्रोध लोभ मोहादि प्रवृती स्त्री के कुटुम्ब हैं। ३-ताजिया, फोट्ट, समाधी, पाथर, माटी, काष्ठ का भेड़हा जगन्नाथ जी को देखने पूजने जाते हैं और शब्द ओंकारादि ये सब जड़ मुर्दा हैं। ४-बीजक रमैनी २२ का प्रमाण है—मन्दिर तो है नेह का, मति कोइ पैठो धाय। जो कोई पैठे धाय के; बिन सिर सेंती जाय ॥ अर्थ—सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि यह जीव नर तन पाय कर अपने चैतन्य राम को छोड़ कर, स्त्री दास जमीन औ जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना वाणी जाल, नौकाल हनि डारा ॥ यह नौ में नेह लगा कर चौरासी का कोड़ा भरा सो जानिये।

(२५) प्रश्नः—निज स्वरूप बोध स्थिती के लिये गुरु जी शिष्य से पूछते हैं ?

दोहा—शब्द बड़ा कि शब्दी, योगी बड़ा की योग।
यन्त्र बड़ा कि यन्त्री, भोगी बड़ा कि भोग ॥ १ ॥
मन्त्र बड़ा कि मन्त्री, भेदी बड़ा कि भेद।
कर्म बड़ा कि कर्मी, बेदी बड़ा कि वेद ॥ २ ॥

(छन्द) शिष्य उत्तर

हे सद् गुरु शब्दी बड़ा, मैं शब्द से पृथक रहा।
योग से योगी बड़ा, अब यन्त्र तजि यन्त्री गहा ॥ १ ॥
भोग से भोगी बड़ा, अब मन्त्र तजि मन्त्री लहा।
भेदी बड़ा को गहि लिया, अब भेद को दीना बहा ॥ २ ॥
मन्त्री बड़ा से काम है, अब मन्त्र तजि पारख लिया।
कर्म से कर्मी बड़ा, बद[१] कर्म तजि कर्मी भया ॥ ३ ॥
वेद से वेदी बड़ा, निज रूप येही सार है।
रामलाल को बोध ऐसा, गुरु चरण गहि पार है ॥ ४ ॥

प्रमाण बीजक शब्द ११२-११३ में देखिये कबीर साहेब कहते हैं।

ब्रह्म बड़ा कि जहाँ से आया, बेद बड़ा कि जिन उपजाया।
योग जप तप संयमा, तीरथ ब्रत दाना।
नौधा वेद कितेब है, झूठे का बाना ॥

टिप्पणी १—चोरी हिंसा व्यभिचार जुवा खेलना नशादि ही बुरे कर्म हैं।

नाम रूप मिथ्या करि जानो, भ्रम भ्रम क्यों हारा ।
कहहि कबीर सुनो भाई साधो, परखन वाला न्यारा ॥
मनुआँ छोड़ो साथ हमारा ॥

(२६–भजन दादरा)

सन्तो लागे जमाना खोटा ॥ टेक ॥ जोणू दाम जमीन के कारण, काहे रखायो शिर भोटा ॥ सन्तो ॥ १ ॥ ताजी[१] तुरकी[२] कबहूँ न साधेव, करत ठगौरी[३] प्रतिमा के ओटा ॥ सन्तो ॥ २ ॥ जीव अनेक नारि ह्वै बैठे, मुर्दा ईश्व बनायो ढोटा ॥ सन्तो ॥ ३ ॥ गाँजा भाँग तमाल न छोड़्यो, बुद्धी, दिमाग भये छोटा ॥ सन्तो ॥ ४ ॥ मेला ठेला नाच सिनेमा, दाम गँवायो थारी लोटा ॥ सन्तो ॥ ५ ॥ संयम[४] सहित रहित त्रिगुण[५] से परख डाँड़ गहो मोटा ॥ सन्तो ॥ ६ ॥ साहेब कबीर कै कहा न मानेव, परिहैं यम के सोंटा ॥ सन्तो ॥ ७ ॥ पारख सत्य हृदय में पायों, रामलाल निज मन ही घोटा ॥ सन्तो ॥ ८ ॥

टिप्पणी १–ताजी कहिये मन । २–तुरकी कहिये त्रिष्णा । ३–सीता राम कृष्ण की मूर्ति रख कर गहना जेवर औरतों का मांग कर प्रतिमा को रात के समय पहनाये और नाचे गाये । बस आधी रात को बाबा जी जेवर ले लम्बा हुए, यही ठगौरी है । ४–हरेक बुराइयों से रहित होना या सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य आदि ही संयम है । ५–रज, सत, तम ।

दोहा—स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा।
कुटी कल्पना वाणी जाल, नौ काल हनि डारा॥
मन मरा न माया मरी, मर मर जाय शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, यों कथि कहहिं कबीर॥
दोहा—गाँजा गुलाब रंग, भाँग रंग भूतिया।
मदिरा गलीज्ज रंग, जूता खाय चूतिया॥
पान खायँ राजा, तम्बाकू पियें चोर।
सुर्ती खायँ चूतिया, थुकैं चारिउ ओर॥

(२७—झूलना)

निज स्वरूप प्रत्यक्ष हृदय में, देख के भूँके ताजी है।
ईश्वर निराकार बिन देखे, सुनि के भूँके पाजी है॥
रहम रूह पर करते नाहीं, नाहक बनते काजी हैं।
हाजी हज्ज किहे न बचवौ, काम[१] करबला साजी है॥
आछे दिन पाछे गये, कियो न गुरु से हेत।
अब क्या चेते मूढ़ तै, चिड़िया चुनि गई खेत॥

(२८—दादरा)

ज़िकिर बिन झूँठै भयो है फ़क़ीर॥ टेक॥
भीतर मैल भेष बहु उज्ज्वल, ज्यस सोरी कै क्षीर॥ज़िकिर॥१
लागी जिकिर फ़िकिर सब छूटा, बैठा रहैं ज्यस अमीर॥ज़िकिर॥२
भुइयाँ भूत भवानी पूजेव, नरसिंह और महाबीर॥ज़िकिर॥३

टिप्पणी—१—नौकाल की विषय परपञ्च में फँसना यही काम करबला है।

कहहिं कबीर साधु गुरु पूजौ, जे सब पीरन के पीर ॥जिकिर ॥४

(२६–दादरा प्रभाती)

आलसी मनुवाँ जागो वीर ॥ टेक ॥

नर तन पाय निज रूप न चीन्ह्यो, भरम मर्‍यो ज्यस कीर* ॥१
ओणू दाम जमीन के कारण, निज भाइन को दीन्ह्यो पीर ॥२
चोरी हिंसा छिनारी छोड़ो, सत्संगति से लागो तीर ॥३
अहि[१] न मरै बाँबी[२] के कूटे, देखी देखा पकर्‍यो लकीर[३] ॥४
जाति पाँति के पक्ष न छोड़ेव, मान महन्थी में खोयो शरीर ॥५
मदिरा माँस नशा न छोड़ेव, स्वाँग बनायो रंगी चीर ॥६
नित उठि बैठि काठ[४] की घोड़ी, डूब मर्‍यो बिन नीर[५] ॥७
नारि पुरुष मिलि दुनियाँ रचेउ है, चाह गये नहिं धरिहौं शरीर ॥८
भोजन विद्या वस्त्र आवश्यक, सब का देवो बाबू अमीर ॥९
ई संसार असार समझ के, रामलाल गुरुपद[६] में थीर ॥१०

टिप्पणी–*तोता पानी में अपना रूप देख कर भरम गया नलनी में। १–मन रूपी सर्प। २–बाँबी कहिये बिल अर्थात् निज देह को जलशयन, पंच अग्नि तापना, शूल शय्या, ठढ़ेश्वरी, दोनों हाथ को सुखा डालना; ऊर्ध बाहू, तीरथ व्रत, पञ्चमुद्रा कहिये पाँच तत्त्व का रङ्ग ब्रह्माण्ड में स्वाँसा चढ़ाय के सत्य पुरुष को देखनादि यही बिल पीटना है। ३–लकीर कहिये राम कृष्ण शिव गणेश हसन हुसेन ताजिया की ठठरी बनाकर मुर्दा पूजना या मुर्दा पुकारने का नाम लकीर पकड़ना है। ४–कर्म, योग, उपासनादि ईश्वर अल्लाह मुर्दा जड़ पदार्थ को पूजना पुकारना यही काठ की घोड़ी पर बैठना है। ५–बिन नीर कहिये पानी वाणी रूप ईश्वर मृग तृष्णा जानो। ६–अपना चैतन्य स्वरूप ही गुरु पद है।

(३०–दादरा प्रभाती)

बिन जागे न पइबो सजन सखिया ॥ टेक ॥

क्यापरे सोवो मोहखोह में, कामिन ऐसी लगाये अँखिया॥बिन॥१
चोरी हिंसा नशा सबछोड़ो, लख चौरासीके छुटिहौ जिया॥बिन॥२
गुरु न किहौ साधु न सेयौ, लख चौरासी में बोयो बिया॥बिन॥३
नवो[१]कालकीसुखमाननन्दी, भोगिभोगिनरह्वै गयोकियाँ ॥बिन॥४
झूँठी मूरत साँच पुजारी, आपुइ कर्ता ह्वै गयो तिया[२] ॥बिन॥५॥
जीव पराया निज सम जानो, नर जीवन तब सफल किया॥बिन॥६॥
कहहिं कबीर यह मन बस करिके, अपने में खोजि लेव
आपन पिया ॥ बिन जागे ॥ ७ ॥

दोहा—कायथ से धोबी भला, ठग से भला सोनार ।
देवता से कुत्ता भला, नित उठि भूँके द्वार ॥

(३१—कहरवा)

डोरी लागी है महलिया चढ़ि आवो रसिया ॥ टेक ॥

गुरु ज्ञान हृदय में राखो, जनम जुगन कै छूटे गँठिया ॥डोरी॥ ॥ १ ॥ पाँच देह के त्रिगुण[३] छोड़ो, हंस[४] देह धरि खुलै अँखिया ॥ डोरी ॥ २ ॥ राग[५] रहित वैराग्य सही है, परख भूमि से छूटै कटिया ॥ डोरी ॥ ३ ॥ साहेब कबीर गोहराय कहत हैं, अपने में देख लेव आपन पिया ॥ डोरी ॥ ४ ॥

टिप्पणी–१–नौकाल के अर्थ १३ पृष्ठ टिप्पणी में देखो । २–स्त्री । ३—छः देह के त्रिगुण का नाम व अर्थ गुरु चेला सम्बाद ४८० पृष्ठ में देखिये । ४—दया धैर्य्य सत्य शील विचार यही हंस लक्षण है । ५—नौकाल के विषय सुख में ममता रखने को राग कहते हैं ।

[३२—कँहरवा]

ननदिया[१] तुमका चुन्दरी, देवैं रंगाय ॥टेक॥ उड़ि चलो हंसा मानसरोवर, मोती चुनो अघाय। सन्तन के घर रतन खजाना, तौन देब खोलवाय ॥ ननदिया ॥ १ ॥ लुरकी झुमका बाँक बिजायट, लटकन देब गढ़ाय। सुरति संभारि चलौ ससुरे का नैहर सुधि बिसराय ॥ ननदिया ॥२॥ सत्य के लेहँगा चुरिया सहाना, ज्ञान की चुन्दरी रंगाय ॥ न्याय नीति के देव कजरवा, रखबै पिया बिल्हमाय ॥ ननदिया ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, राखो मन ठहराय। नइहर आश वास तजो सजनी, पास पिया मिल जाय ॥ ननदिया ॥ ४ ॥

(३३—गारी)

आस[१] पास[२] बन[३] बबुरी[४] बोवायों, बिचवा[५] बोवायो चौरैया[६] हमारे लाल[७] ॥ १ ॥ खोटन निकरी माया छिनरिया, सुरति उठाय लैगा कौवा हमारे लाल ॥ २ ॥ धावो धूपो रसिया निरञ्जनलाल, बगिया हड़ाय आवो कौवा हमारे लाल ॥ ३ ॥ आम अनार डड़ियन पर खाइन, छोकला बहावें अंगनइया हमारे लाल ॥ ४ ॥ धरम दास का सद्गुरु चेताइन, जनम मरण दुख जइया हमारे लाल ॥ ५ ॥

टीका—१—आश कहिये आशा, २—पास कहिये अन्तःकरण, ३—बन कहिये वाणी को ४—बबुरी कहिये वासना, ५—बिचवा कहिये जवानी होश में, ६—चौरैया

टिप्पणी—१-नौकाल में नेह लगाने वाले गुरुवा लोग को ननद कहते हैं।

कहिये चारो वेद। ७—लाल कहिये मनुष्य देह में पारख। सन्त पारखी कहते हैं हे जिज्ञासुओ! यह जगत अनादि होने से चार ऋषियों ने होश में आने से एक ईश्वर कर्ता का अनुमान करके चार वेद को पढ़ा या भाषण किया, पण्डित ब्रह्मा ने चार वेद चौरइया का ओंकार मन्त्र यन्त्र बन बबुरी बोया, सोई आशा बानी ओंकार मनुष्य के अन्तःकरण में टिका ॥२॥ माया छिनरिया कहिये गुरवा लोग वेद बाणी का मन्त्र लेकर संसार में अज्ञ जीवों को खोटन निकरे यानी चैतन्य धन प्रत्यक्ष हरण करके धोखा ओंकार अनुमान में बाँधा। सुरति उठाय लैगा कौआ = कुबुद्धि रूपी कौआ ने सुरति को नौकाल की मानन्दी ओंकार मुर्दा में बाधा। ३—जब सुरति नौकाल की माया में फँसी तब इस निरञ्जन मन को बहुत जगह धावै धूपै दौड़ै का परा, काहे को? कि जब कुटुम्ब को दुःख भया तब अनेक जगह गोबर माटी ताजिया ऊँच थान जहँ देखै तहँ माथ पटकै, अपने पुत्र के कल्याण निमित्त बकरी भेड़ा कटवाने लगे, वृती रूपी बगिया पर कुबुद्धि रूपी कौआ बैठा है हड़ाने उड़ाने से भागता नहीं। ४—आम कहिये आत्मा सर्वदेशी झीनी माया ब्रह्म, अनार कहिये मोटी माया स्त्री दाम जमीन, कुसङ्ग रूपी डाली पर बैठकर खाया यानी उसी में पचे मरे छोकला कहिये छः शास्त्र का मत न्यारे २ होने से उसी का वासना रूपी बोकला अन्तःकरण में जमा होने से जन्म मरण दुःख लगा रह गया। ५—यही दुःख सद्गुरु कबीर साहेब

धर्मदास को एक २ परखा कर काग बुद्धि छोड़ा कर हंस बुद्धि से चैतन्य पारख हृदय के अन्दर बता कर बहु बन्धनों से मुक्त किये। चौपाई = कबीर बचन—छर अक्षर निःअक्षर तीन। धरमदास तुम निज को चीन्ह॥ छर कहिये देह से अच्छर बना निःअच्छर कहिये शून्य आकाश अवस्तु पोल ही को अपना कर्ता माने।

(३४-गारी)

साड़ी पहिर मैल करि डारी, दामन की बहु भारी जी॥ १
जैसन कर्म किहौ पूरब में, तैसन देह सँवारी जी॥ २
आठ मास नौ सिरजत लागे, अजमत कि बिनकारी जी॥ ३
जाय रसिक घर साबुन लावो, साड़ी धोय सुधारी जी॥ ४
कहहिं कबीर जो साड़ी सुधारै, ताकी मैं बलिहारी जी॥ ५

(३५-गारी) दो दफे कहना चाहिये

जो तू पिया की पियारी, अपने पिया पर सिङ्गार करे॥ १
जाके सुमति के कंगही, करम केश निरुवार करे॥ २
जाके तत्त्व के तेला, प्रेम की डोरी से चोटी गुन्धे॥ ३
जाके परख के काजर, बेन्दी विचार लिलार सोहे॥ ४
जाके चित्त के चुरिया, रहनी के कङ्गन दमक रहे॥ ५
जाके नीति नथुनियाँ, लटकन लव के लटक रहे॥ ६
जाके शील के सेंन्दुर, दाया हबेल गले में सोहे॥ ७
जाके छन्दी क्षमा के, मञ्जन मुन्दरी हाथ गहै॥ ८
जाके अकिल के अंङिया, सुरति निरति दोऊ बन्द लगे॥ ९

जाके चेत चुन्दरिया, ज्ञान के लेहङ्गा घुमड़ि रहे ॥ १०
जाके न्याय के नारा, फहम के फुलरा सोहि रहे ॥ ११
जाके युक्ती के जेवर, विछुवा विवेक बजाय रहे ॥ १२
जाके सत्य के सुरमा, अजर अमर पिया पास यहीं ॥ १३
इतना धन पहिरे, रूठे पिया को मनावें सही ॥ १४
गारी गावें धरमदास, पाय परख पद मुक्ति मही ॥ १५

(३६-गारी)

माया[१] के समधिन जाल पसारिन, मनहु[२] समधि अरुझाने ॥
जी वाह वाह ॥ टेक ॥१
कर्म के कड़ा छड़ा छल बल के, पायल पाखण्ड बजावें जी ॥२
असाधि अनवट अधर्म के नेहुआ, अकर्म बिछुवा बजावें जी ॥३
चिन्ता के चुरिया कुमति मनिहारिन, ले बहियाँ पहिरावें जी ॥४
आगे अगेलवा अज्ञान के सोहै, भरम पछेला लगाये जी ॥५
छन्दी अनीति अन्याय के कंगना, प्रकृत कील लगाये जी ॥६
जोशन जाल फरेब के बाजू, भूल बहूँटा गुहाये जी ॥७
हिंसा कै हंसुली असत्यकै टेड़िया, निन्दा निगुरही पोहाये जी ॥८
झूँठ कै झुमका करणफूल चावकै अपयस हार हबेलय जी ॥९

टिप्पणी १--पण्डित ब्रह्मा, पाण्डवा तामसी, नौकाल में फँसने वाले गुरवा भ्रमिक, लोग ये अपना २ खानी बाणी जाल पसारिन। २--मन रूपी समधी कर्म, यो, उपासना, ज्ञान, विज्ञान में अरुझे, तब निज रूप कहिये गुरु पद निज पद जीव अविनाशी छूट गया सो जानिये ।

लालच लेहङ्गवा पहिर धन निकरी, गर्ब के गोट लगाये जी ॥१०
मोह मसाले कै चटक चुन्दरिया, चाहके चशक धराये जी ॥११
शरम सेन्दुरवा से माँग भराये, मारैं बिदेशिया कै जानैजी ॥१२
अपने झरोखवा से झाँकै मनोराम, देखि २ मुसकाने जी ॥१३
सन्त समधिया के मनही न भावे, ई माया ब्यवहारैं जी ॥१४
लीला दास गुरु मूरत निरखै, धरि चरनन पर शीशैजी ॥१५
गारी बिचार परसपर गावे, लीला दास निहारी जी ॥१६
गारी गावे परम पद पावे, सद्गुरु की बलिहारी जी ॥१७

३७–मन बोध और सतसई का दोहा

आखर अर्थ बिहीन गति, मन बुद्धि चित नहिं दौर।
रेख रूप नहिं बचन कछु, किम बैठिये तेहिं ठौर ॥ १ ॥
अलख कहैं देखा चहै, ऐसो परम प्रबीन।
तुलसी जग उपदेशहि, बनि बुध अबुध मलीन ॥ २ ॥
वर्ण योग करि नाम भये, जानि मर्म को मूल।
तुलसी कर्ता है तुहीं, जानि मानि मति भूल ॥ ३ ॥
रसना के सुत ऊपरे, करत सदा फिहिरिस्त[१]।
ते पीछे सब जग लगे, समुझ न रीति अनीति ॥ ४ ॥
तुलसी कहे ते क्या भयो, करत नाहिं पहिचान।
निज उपजाइन शब्द सुधि, ता पाछे बौरान ॥ ५ ॥

टिप्पणी १—सूची, यानी जीभ के नोक से रं रं राम २ बार २ फेरते रटते रहते हैं मगर अविनाशी राम हृदय निवासी को नहीं जानते जैसे तोता पिञ्जड़ा से निकला जङ्गल में टें टें करने लगा।

आप उपजावे शब्द को, परखत नहिं ठहराय।
सो बिश्वास उबरन चहै, मूढ़ सबहिं पतियाय ॥ ६ ॥
जब लग लखि न परत है, तुलसी पर पद आप।
तब लग मोह बिवश भय, कहत पुत्र को बाप ॥ ७ ॥
आगल दिन पाछे भये, कृषित भये सब गात।
तुलसी कहि रूप रेख नहीं, ताते मन पछितात ॥ ८ ॥
हों हजूर सूझत नहीं, लानत वाके जिन्द।
तुलसी यह जग आय के, भयो मोतिया बिन्द ॥ ९ ॥
आवत जात कहो कहाँ, जहाँ जनम तहाँ बास।
तुलसी शठ समुझत नहीं, करत कहाँ को आस ॥ १० ॥
कल्प वृक्ष के चित्र लिखी, बिनय कीन हजार।
बित्त न पावै ताहिं ते, तुलसी देख विचार ॥ ११ ॥
को सुने कासे मैं कहूँ, सिंह[१]हि ग्रसे सियार[२]।
तुलसी मूस[३] के गरज से, मज्जर[४] करैं चिकार ॥ १२ ॥
रबि के खोजन रबि चले, शशि खोजन शशि जायँ।
प्यास जो लागे जलहिं के, केहिं विधि तृषा बुझाय ॥ १३ ॥
सकल कहत घट राम मय, तब खोजत केहिं काज।
तुलसी कहँ यह कुमति सुनि, उर आवत है लाज ॥ १४ ॥

टिप्पणी—१-सिंह कहिये जीव। २—सियार कहिये वेद का मन्त्र ओंकार। ३—मूस कहिये विवेकी पारखी सन्त के गरजने से। ४—पण्डित ब्रह्मा, पण्डवा गुरुवा, स्त्री, भूत प्रेत ईश्वर ब्रह्म ये सब मज्जर कहिये बिलार सो चिक्कार कर भागते हैं।

तुम तो जीन्वमुक्त हो, तजो मुक्त की आश।
जेहिं ढूँढ़त तुमहूँ फिरो, सो तो आपै पास ॥ १५ ॥
मुक्त मुक्त सब ही कहै, मुक्त पदारथ कौन।
बन्ध छोड़ि निरबन्ध होय, मुक्त पदारथ तवन ॥ १६ ॥

(३८)-विवेक चूणामणि २०१ श्लोक का टीका—शङ्कराचार्य कहते हैं कि माया और माया का कार्य दोनों प्रवाह रूप से अनादि है अर्थात् किसी समय जगत नहीं था, ऐसा कहा जाता नहीं अथवा और भी कहे हैं ? अर्थ (श्लोक १८९ विवेक चूणामणि) शंकराचार्य कहते हैं कि अहंकार स्वभाव युक्त अनादि काल से, सर्व जीव अनेक व्यवहार करते ही आते हैं, इस प्रमाण से पाँच जड़ तत्त्व और देह धारी अनेक चेतन जीव सहित प्रतीति होता हुआ यह जगत अनादि काल का है, तो स्वप्नवत कैसे कहते हो ? जरा ख्याल तो करिये कि जो वस्तु आज देखी वही वस्तु दस, पचास सत् वर्ष तक देखने में आती है और पृथ्वी आदि तत्त्वों का रूपान्तर किसी के अनुभव में नहीं आता है तथा स्वप्न की वस्तु जो आज के स्वप्न में देखी है सो वह वस्तु कल स्वप्न में नहीं दिखाती है क्योंकि स्वप्न जो देखते हैं सो घड़ी प्रहर अथवा क्षणमात्र ही देखते हैं यदी जगत स्वप्न समान होवे, तो क्षण घरी अथवा प्रहर से अधिक न दीखना चाहिये ? यद्यपि स्वप्न में अधिक काल की प्रतीति होती है तथापि स्वप्न में अधिक काल की प्रतीति जाग्रत काल के संस्कार से ही होती है यदि जाग्रत काल के

संस्कार बिना अधिक काल की स्वप्न में प्रतीति होवे, तो स्वप्न काल में आकाश के फूलों की भी प्रतीत होनी चाहिये ! सो होती तो नहीं है इस लिये ऐसा समझना चाहिये कि जाग्रत काल के पदार्थों के संस्कार बिना, स्वप्न काल के पदार्थों की प्रतीति होनी असम्भव है ।

(३९–भजन) सूरसागर का प्रमाण ।

माधो नेक हटलो गाय ॥ टेक ॥
चार वेद चरण वाके, जगत गौंजा जाय ।
तीन लोक खुरखुण्ड डारिस, चौथे को बम्भाय ॥ माधो ॥ १
शील रूपी नेत्र वाके, जगत देखत धाय ।
शुभाशुभ दो श्रवण वाके, जगत सुनत चित लाय ॥ माधो ॥ २
पाप पुण्य दो सीङ्ग वाके, मारे बेधे धाय ।
नेम धर्म आचार पूजा, यही चारा खाय ॥ माधो ॥ ३
प्रेम रूपी पूँछ वाके, जगत पकड़त धाय ।
भग द्वारे बैकुण्ठ वाके, जगत गोता खाय ॥ माधो ॥ ४
सूर के यस मदन मोहन, कस कहेव समुझाय ।
बार बार भटकाय हमें, बैकुण्ठ बताय बताय ॥ माधो ॥ ५

(४०–शब्द गारी)

जो पूछौं सो कहो दया करि, कहत न मन में क्रोध करो ॥ १
मोही बतावो केहि शिर नाउँ, केहि ध्याउँ केहि ध्यान धरौं ॥ २

कौन जीव है कौन शिव है, कौन भेद से काज सरो ॥ ३
राम के नाम कहाँ ते आया, आदि कहाँ जहाँ ते उच्चरो ॥ ४
की भुँई फारि प्रकट होय जग ते, की आकाश से कूद परो ॥ ५
फल चारो केहि देश रहत है, कौन वृक्ष जहँ लागि फरो ॥ ६
ताकर भेद मोहिं समझावो, को तौरे को खाय तरो ॥ ७
ज्ञान वान से बूझ हमारी, दुइमा एक करो न टरो ॥ ८
की अपनी कही मोहि बुझावो, की मेरी ह्वै आनि लरो ॥ ९
बाहर खोज छाड़ि दे बौरे, केहि कारन बिन अगिन जरो ॥१०
तेरा साहेब है तुझही में, मदन खोजि दिल माहिं करो ॥११

कबीर साहेब, रामानन्द जी को सीढ़ी पर बालक रूप से चेताते हैं। ग्रन्थ अगम निगम बोध पृष्ठ ३४ का प्रमाण।

(४१–भजन)

गुरु जी समुझि गहो मोरे बाहीं, औरन सो चेला हम नाहीं ॥टेक॥
जो बालक घुन घुनवा खेलै, सो बालक हम नाहीं।
चौदह सै चौरासी चेला, तेहि मध्ये हम नाहीं ॥गुरु॥१
हम तो लेते सत्य के सौदा, पाखण्ड पुजवैं हम नाहीं।
बाँह गहो तो गहिं के पकरो, फेरि छूटि नहिं जाहीं ॥गुरु॥२
हाड़ चाम हमरे कछु नाहीं, जोलहा जाति हम नाहीं।
सत्य जीव अविचल अविनाशी, अटल रहो तेहि माहीं ॥गुरु॥३
तुम्हारी नाँव में केवट नहीं, लहरि उठै विकरारा।
गुरु समेत शिष्य जब बूड़े, कौन उतारे पारा ॥गुरु॥४

जो तुम्हरे कछु उद्दिम नाहीं, भीख माङ्गि किन खाहू ।
मूरि सजीवन जानत नाहीं, भूलि न बाँधो काहू ॥गुरु॥५॥
सूखे काठ में ज्यों घुन लागे, लोहे लागे काई ।
बिन प्रतीत गुरू जो कीजै, तो काल घसीटे जाई ॥गुरु॥६॥
कहहिं कबीर सुनो रामानन्द यह सिख लेव हमारी ।
निरखि परखिके चेला कीजे, ता गुरु की बलिहारी ॥गुरु॥७॥

(४२) प्रश्न :—रामानन्द से कबीर साहेब पूछते हैं कि किसके सुमिरन ध्यान करने से जीव मुक्त होवेंगे ?

उत्तर—रामानन्द जी देते हैं चौपाई—

सुमिरहु दशरथ सुत श्री रामा * अवधपुरी अविचल निज धामा ॥
श्याम स्वरूप ध्यान मन धारो * तन छूटै वैकुण्ठ सिधारो ॥

(४३) प्रश्नः—तब कबीर साहब चौपाई कहते हैं कि

जब त्रेता तब राम भुआरा । कौन पुरुष को सकल पसारा ॥
दोहा—पाँच तीन जहवाँ नहीं, नहीं प्रकृत प्रवेश ।
रवि शशि पानी पवन नहीं, तहवाँ कहो सन्देश ॥

रामानन्द जी को इसका उत्तर न आने से स्वरूप बोध न होने से रामानन्द जी कबीर साहेब से विनय करते हैं !

दोहा—मैं जाना तुम जोलहा, मोहि पड़ा बड़ धोख ।
मूल दीक्षा मोहि देहु कबीर, जीवत आवे सन्तोष ॥ १ ॥

कर्ता तुम हो साधु हो, सत्य कबीर है देव।
तन मन तुमको अर्पिहों, कलह दीक्षा मोहि देव ॥ २ ॥
उत्तर—कबीर साहेब देते हैं।

साखी-काल करन्ते आज कर, आज करन्ते अब।
औसर बीता जात है, फेरि करोगे कब ॥ १ ॥
काल करन्ते काल है, मोहि भरोसा नाहिं।
यह तन काँचा कुम्भ है, बिनशि जाय क्षण माँहि ॥ २ ॥
घड़ी पलक की सुधि नहीं, करो काल को साज।
काल अचानक मारिहैं, ज्यों तीतर को बाज ॥ ३ ॥

(४४—गारी)

जोरा जोर जनावे, जोरा जोर जनावे, यह माया पर पंचनियाँ ॥१
दुइ रूप बनावे, दुइ रूप बनावे, यक कंचन एक कामनियाँ ॥२
एक खाय खिलावे, यक संशय दै मारनियाँ ॥३
ताको करिये कैसा, सन्तो करहु विचारनियाँ ॥४
गहो सद्गुरु शरना, जाय के करहु पुकारनियाँ ॥५
समरथ सुनि लीजै, घर बन माया लागनियाँ ॥६
गुरु अस्त्र बँधाये, काम क्रोध दल मारनियाँ ॥७
नर ना कोई बाँचे, संशय शोक संघारनियाँ ॥८
पद[१] देहौं मवासी,[२] करि देहौं निस्तारनियाँ ॥९
गुरु कहत कबीर जी, बहुरि न भव जल आवनियाँ ॥१०

टिप्पणी १—पद कहिये चैतन्य पारख अविनाशी। २—मवासी कहिये वैराग्य :

(४५-गारी)

तोरी मइया मनो राम, तोरी मइया मनो राम,
सूतै जोलाहे[१] की सेजरिया ॥ टेक ॥ १
लंगड़[२] सेज बिछावें, जोलाहे के आवै जुड़ि तापनियाँ ॥ २
दाढ़ी जारों जोलाहे, काहे किहौ तन काजनियाँ ॥ ३
भोरा होने दे लंगड़, उतरि जइहैं तन तापनियाँ ॥ ४
तोरी नरिया भरोंगो, ठोंकि बिनावों चौतालनियाँ[३] ॥ ५
नौ[४] तारे को जामा, सिर पचरंगो[५] पागड़िया ॥ ६
पहिरो पहिरो मनो राम, माया की है परसादनियाँ ॥ ७
यक सेत[६] बछेड़ा, समरथ हैं असवारनियाँ ॥ ८
चौलरिया[७] के चाबुक, हाथ लिहे प्रभू हाँकनियाँ ॥ ९
लंगड़ हाँकत आवें, हाँकि अमरपुर[८] पठावनियाँ ॥ १०
गारी गावें धरमदास, साहेब कबीर निर वारनियाँ ॥ ११

(४६-गारी)

सेवक के गृह सद् गुरु आये, काले करों मेहिमानी जी ॥ १
चरण धोय चरणामृत लीजै, तन की तपन बुझाये जी ॥ २
चित चौका सन्तोष बैठका, प्रेम के पातर आये जी ॥ ३

टिप्पणी १—जोलाहे कहिये जीवको। २—लंगड़ कहिये त्याग, भक्ती। ३--चार खानियों में जन्म। ४--शब्द स्पर्श, रूप, रस गन्ध, मन, चित, बुद्धि, अहंकार, ५--पचरंगी कहिये, पाँच तत्व। ६--सेत कहिये, शान्ति। ७--विवेक, वैराग्य, षट सम्पति, मुमुक्षत्व। ८--अमर जीव अविनाशी पर शान्ति होना।

निरति के गेणुवा जल भरलाये, परसल सुरति सयानी जी ॥ ४
अकिल के आम नेह के नेबुआ, अदख आनि मिलाये जी ॥ ५
शील के सेम भाव के भाँटा, बना है कराल करैला जी ॥ ६
धोय के डार बिचार के जल में, कर्मन की करुवाई जी ॥ ७
हया की हरदी हींग हृदय की, तत्त्व के तेल बघारी जी ॥ ८
मन के मूंग मूंग के मुँगोरा, प्रीति के पापर आये जी ॥ ९
दिल दाल करु बरा हेत कर, सुरति के घीव मङ्गाये जी ॥१०
दुबिधा के दही छान गाढ़े में, ज्ञान गरीबी आये जी ॥११
महिमा पुरा मनोरथ उतरे, चटक जलेबी आये जी ॥१२
ऐता जेवनार बने घट भीतर, सद्गुरु नेवति बुलाये जी ॥१३
साधू साहेब पावन बैठे, छुटले प्रेम रस गारी जी ॥१४
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो महिमा बरणि न जाये जी ॥१५

(४७–गारी)

धन्य भागि जगी है, धन्य भाग जगी है।
मानुष देह धरी हो धरी ॥ टेक ॥ १
नर चेतौ सबेरे, बीतल जात घरी हो घरी ॥ २
बिना सन्त गुरू के, जग में कौन तरी हो तरी ॥ ३
नर संत सुमिर लो, तब तेरो काज सरी हो सरी ॥ ४
सत्संग तेज से, सब दुख दोष जरी हो जरी ॥ ५
भ्रम भास छोड़ि दो, गुरु पद देखि परी हो परी ॥ ६
गारी दासनिर्मल कैं, गुरूजीसे अर्जकरी हो करी ॥ ७

(४८--गारी)

जैसे तेल दिया बिन बाती, ह्वै न सकै उजियारी जी ॥ १
वैसे नर गुरु ज्ञान विहूना, भरम सकै नहिं टारी जी ॥ २
धन्य कहौं वै चतुर सखिन को, तन मन धन सब वारी जी ॥ ३
घूँघुट[1] कै पट खोलौ बहूरिया, देखौं मैं सुरति तुम्हारी जी ॥ ४
वहि दिन की दिन कब होइहैं सखियाँ, जबै जाब ससुरारी जी ॥ ५
गहि कै अङ्ग सङ्ग प्रीतम[2] कै, हँसि हँसि चढ़ब अटारी जी ॥ ६
सत्य कबीर दया करो साहेब, दरश देहु यक बारी जी ॥ ७
उग्र[3] नाम साहेब के चरणन, धरम दास बलिहारी जी ॥ ८

(४६-गारी)

बटिया जोहौं दिन रतिया, साहेब बिन नींद न आवे ॥ ॥ टेक ॥ अगम अगोचर देस साहेब कै, को लैके जाय वहाँ पतिया ॥ साहेब बिन ॥ १ ॥ यक तो बैरन सासु[4] ननदिया[5] दुसरे सवति[6] दुरमतिया ॥ साहेब बिन ॥ २ ॥ काम क्रोध धै धै झक झोरै, संशै फारे डारे छतिया ॥ साहेब ॥ ३ ॥ धर्म दास की अरज गोसाईं, राखो मोर हुरमतिया साहेब ॥ ४ ॥

टिप्पणी १- दुविधा । २-अपना चैतन्य स्वरूप । ३-दोहा-चुद्र ज्ञान रस भोग करावे, अनुभव ज्ञान है योगी । उग्र ज्ञान सद्गुरु का, न योगी न भोगी ॥ ४-संसय लगाने वाले गुरवा । ५-नौकाल मैं नेह लगाने वाले ननद चेला । ६-कल्पना अनुमान रूपी ईश्वर सवति है ।

(५०—गारी)

धन्य धन्य सो धनियाँ, धन्य धन्य सो धनियाँ,
सत गुरु सत्य कबीर मिले ॥ टेक ॥ १ ॥
गरे तुलसी के माला, स्वेत सोहाग लिलार सोहै ॥ २ ॥
श्रवण मन्त्र सुनावें, सून्दल दृष्टि उघार दिये ॥ ३ ॥
चक्षु तिमिर सब छूटे, पिय हिय माँहि लखाय दिये ॥ ४ ॥
पूछैं सखिया सयानी, कौन रूप तोहिं दरश दिये ॥ ५ ॥
सत्य[1] लोक[2] के वासी, साधु रूप गुरु प्रकट मिले ॥ ६ ॥
बोले अमृत बानी, सुनत सकल दुख दुर भयो ॥ ७ ॥
धर्म दास की गारी, साहेब कबीर निर वार कियो ॥ ८ ॥

(५१—गारी)

कहाँ भूलेव मूरख गँवार, हो चित चेत करो ॥टेक॥ १ ॥
चकर मकर चित चाची तुम्हारी, पूँछ डोलावनि हार हो
चित चेत करो ॥ २ ॥ मान कुँवरि मन मौसी तुम्हारी, उनहूँ
के दस लगवार हो चित चेत करो ॥ ३ ॥ निर बुधिया तोरी
फूफू जो लागै, फाँदि गई डँड़वार हो चित चेत करो ॥ ४ ॥
काम क्रोध दोनों ननदी बजिन्दा, सोवत पाँव पसारि हो चित
चेत करो ॥ ५ ॥ वहि घर की पति कैसे रहैगी, जहाँ गाही

टिप्पणी १—चैतन्य पारण अविनाशी को सत्य कहते हैं। २—अत्यन्त सन्तन का सत्सङ्ग ही सत्य लोक है।

के गाही[1] छिनार हो चित चेत करो ॥ ६ ॥ मदन अमृत रस गारी जो गावे, सन्तहु लेहु विचार, हो चित चेत करो ॥ ७ ॥

(५२—गारी)

सुनो सुमति बहुरिया, सुनो सुमति बहुरिया,
केहि विधि भोजन बनावनियाँ ॥ टेक ॥ १ ॥
बनी काहे की पतरी, काहे की लागल डोभनियाँ ॥ २ ॥
बने प्रीति पतरिता, सुरति निरति लागे डोभनियाँ ॥ ३ ॥
बने काहे की दोना, काहे की धेना परोसनियाँ ॥ ४ ॥
बने ज्ञान की दोना, ध्यान के धेना परोसनियाँ ॥ ५ ॥
बने काहे की भाता, काहे की रोटी पोवा बनियाँ ॥ ६ ॥
बने भाव के भाता, रहनि की रोटी पोवा बनियाँ ॥ ७ ॥
बने काहे की दाली, काहे की निमक मिलावनियाँ ॥ ८ ॥
बने दाल दया की, सत्य के निमक मिलावनियाँ ॥ ९ ॥
पावें साधू साहेब, कर से मैं बेनिया डोलावनियाँ ॥१०॥
गारी गावें धरम दास, साहेब कबिर निरुवारनियाँ ॥११॥

(५३—गारी)

बहुत दिनन से पिया मोर बिछुड़े, मोर मन अधिक अन्देस। रसना राम भजो ॥१॥ तन व्याकुल मन उमकि उमकि रहे, जाऊँ चली कौनें देश ॥ रसना ॥ २ ॥ उमा सहित शिव शक्ती

१—पाँच तत्व के पच्चक के पचीस विषय का नाम गाहीं के गाही छिनार हैं सो जानिये। शब्द का विषय राग सुर अर्थ, स्पर्श का विषय कोमलत्वादि। रूप का विषय सुन्दरत्व। रस का विषय स्वाद। गन्ध का विषय सुप्रसन्नत्व।

मनायों, पूजेंव मैं गौरी गनेश ॥ रसना ॥ ३ ॥ कोई आकाश पताल बतावे, कोई पुरुबवा के देश ॥ रसना ॥ ४ ॥ जल तत्त्व हेर्‌यों अगिन तत्त्व हेर्‌यों, तबहूँ न मिले रूप रेख ॥ रसना ॥५॥ नाऊ१ औ बारी२ खोजि पन्थ हारे, पण्डित के उपदेश ॥ रसना ॥६॥ सुरति सोहागिन गारी गावें, जेकर पिया परदेश ॥ रसना ॥७॥ बिछुड़ल हंस मिलावें कबीर साहेब, लै पहुँचावें निज देश ॥ रसना ॥ ८॥

(५४-मङ्गल चेतावनी)

तिरिया है नीची जाति हटक मानै नहीं ॥ १ ॥
पूजैं वै देवी देव, जनम सुतनी भई ॥ २ ॥
जो तिरिया मछरी खायँ सोई चुरइल भई ॥ ३ ॥
मछरी के पूतेक श्राप जनम बाँझिन भई ॥ ४ ॥
बसे बाँझिन भँइस, जनम लादी गई ॥ ५ ॥
बछइत नीचा जाति जीव को जपे करैं ॥ ६ ॥
सोरी के पूतेक श्राप जनम कोढ़िक धरैं ॥ ७ ॥
जौ बकरा भये भूत, सोई बदला लेत हैं ॥ ८ ॥
धरि छातिन पर लात, मारै बहु वेंत हैं ॥ ९ ॥
कहहिं कबीर नर नारि, जीव जानि मारहू ॥१०॥
दया धर्म हृदय राखि, मुक्ति नर पावहू ॥११॥

टिप्पणी १—जीव नामी को छोड़ कर नाम ओंकार सोहम फँसाने वाले गुरुओं का नाम नाऊ है। २—बार २ जनम देने वाले नौकाल की माया स्त्री का नाम बारी है।

(५५-गारी)

जाय के मिलो अपने साहेब से कौनो भाँति सखीरे ॥टेक॥ भूला फिरौं ठाँव नहिं पावों, गुरु के चरण चाही लावन का कौनो भाँति सखीरे ॥ जाय ॥ १ ॥ मन मूरख तन मलिन भयो है, ज्ञान चही तन माँजन का कौनो माँति सखीरे ॥जाय॥ ॥ २ ॥ भूख पियास मिटत नहीं कबहूँ, पाँच भूत चाही मारन का कौनो भाँति सखीरे ॥ जाय ॥ ३ ॥ जय जय गोविन्द गुरु भीखा साहेब, उठि उठि जिया चाहै भागन का कौनो भाँति सखीरे ॥ जाय ॥ ४ ॥

(५६-गारी)

नौमी तिथि जब नौ दर मून्दै, दसयें राम औतारा ॥ रसना राम भजो ॥ १ ॥ दशरथ दश इन्द्री धरि मारै, सत्य कौशिल्या माता ॥ रसना ॥ २ ॥ भरत भ्रम तजि पाँच शत्रुहन, गुरु लक्ष लक्ष्मण भ्राता ॥ रसना ॥ ३ ॥ अवध सोई जहाँ सन्तसमागम सरजू सरल स्वभाऊ ॥ रसना ॥ ४ ॥ चैत मास हरि चरचा निशिदिन, शुक्ल पक्ष लव लाई ॥ रसना ॥ ५ ॥ स्वर्ग द्वार सत गुरु शरणाई, निर्मल जल स्नाना ॥ रसना ॥ ६ ॥ मञ्जन संयम आतम पूजा, तन मन दीजै दाना ॥ रसना ॥७॥ गुप्त मते की बात कठिन है, प्रगट कीन पसारा ॥ रसना ॥८॥ पलटू तनिक तनिक हम बूझा, चेतन राम हमारा ॥ रसना ॥ ९ ॥

(५७-शब्द गारी)

माया ठगनियाँ के चाल बेकार सुनो भइया हमार ॥टेक॥ सूर सती माई धरम तुम्हार, रउरे भरोसे गावें जग संसार, यही अरज हमार ॥ १ ॥ भेलई तू बतिया का बोलेव सम्हारि, नहिं माया तूरि देहैं दँतवा तुम्हार लेई चुकीं उखार ॥ २ ॥ जब माया अइली पहली बार, नेपे नेपे चलैं जैसे बपुरी बिलार तोपे घुट्टी लिलार ॥ ३ ॥ जब माया नाँघि गइली बिचली द्वार, गँनै २ कुल घर लेहली निहार कहै सज्जे हमार ॥ ४ ॥ जब माया रहि गई दिन बिस्तार, मोरे बचवा के मारि दिहिलस जादू पेटार लागे झुलनी के स्मार ॥ ५ ॥ खन खिरकी खन ताके मोहार, खन में लुकाय खन ताके द्वार कहैं बैलो हमार ॥ ६ ॥ नीक नीक खायँ सोवें गोड़वा पसार नइहर मैं कहैं घर अच्छा हमार होला बहुतै दुलार ॥ ७ ॥ जब माया अइली दुसरी बार, सासु ननद से करै बिगाड़ खावैं नाती तोहार ॥ ८ ॥ खन रिसायाय खन करै ब्यवहार, खन हँसि बोले खोलै किवाड़, खन लूटै बहार ॥ ९ ॥ खन घर में खन बैठे पिछवार खन घुघुवाय खन फोरै कपार, न्योते घर के ओसार ॥ १० ॥ दुलहा का देत बाटिन गारी हजार, जेठवा के मोछिया लेहली उखार घर फूकब तुम्हार ॥ ११ ॥ गाँव गढ़ी से करै ब्यवहार, बुढ़िया बुढ़वा के देहिलिस निकार फोरे दूसर मोहार ॥ १२ ॥ खन उज्जर खन पियर सिङ्गार, खन पहिरे खन धरै उतार, कहैं

लुगरी हमार ॥ १३ ॥ जो तुम अइबौ बाबा दुवार, तुम का बनाइब अपने भइया कै सार, दाढ़ी जारब तुम्हार ॥ १४ ॥ दाँव परे पर गइली बजार, दुइ सेई लेत चली दीदी हमार, मोर लरिका उघार ॥ १५ ॥ बड़े शूर वीर पावैं न पार, नीमी ऋषी को मारि दिहिन जङ्गल मंझार, लैगै राजा दरबार ॥१६॥ छोटे बड़े से अर्ज हमार, हे माया हम धरत बाटी गोड़वा तुम्हार, पति राखो हमार ॥ १७ ॥ स्वामी सन्तोष दास दाया तुम्हार, मेलई के ऊधोदास हैं रखवार, स्वामी करो हो पार ॥ माया ॥ १८ ॥

(५८—गारी)

हमरे मनो राम ब्याहन जइहैं, शब्द घोड़े असवार ॥
रसना राम भजो ॥ टेक ॥ १ ॥
जग मग ज्योति के मौर बिराजै, चलते हंस के चाल ॥ २ ॥
गौवाँ के पूछत लोग लुगाई, कौने घोड़े असवार ॥ ३ ॥
कौने नगर कहैं ब्याहन जइहैं, जइहैं कौने के द्वार ॥ ४ ॥
निर्मल गढ़ के निर्मल योगी, प्राण पुरुष के उबार ॥ ५ ॥
गैब नगर का ब्याहन जइहै, राव निरञ्जन द्वार ॥ ६ ॥
बड़े बड़े भूप ठाढ़ जमकातर, ठौर ठौर रखवार ॥ ७ ॥
राव निरञ्जन जोर ज़ुलुम हैं, घेरे हैं सदहूँ द्वार ॥ ८ ॥
मारब भूप तूरब जम कातर, जीतब दसहूँ द्वार ॥ ९ ॥
राव निरञ्जन पकरि मँगैबै, राखब काया मँझार ॥ १० ॥

साधु सन्त मिलि भाँवर घूमब, न्याय के तिलक लिलार ॥ ११॥
दुलहिन सहित कोहबरे को आये, ऐसे हैं साहेब हमार ॥ १२॥
भये विवाह मिटी सब संशय, सोवो पाँव पसारि ॥१३॥
साहेब कबीर अमर वर पायों, जुगन जुगन अहिवात ॥रसना॥१४

दोहा—चतुराई चूल्हे पड़ो, जो नहिं शब्द समाय।
कोटिक गुण सुवा पढ़्यो, अन्त बिलैया खाय ॥

(५६—कीर्तन)

मन तजि मेरी मेरी, न होगी यह तेरी ॥ टेक ॥
जानत है पर मानत नाहीं, करत भजन में देरी ॥ न होगी ॥
॥ १ ॥ देह मान अभिमान में भूला, होय खाक की ढेरी ॥ न
होगी ॥ २ । युक्ति देत विज्ञान ज्ञान कर, श्वास फिरे न फेरी
॥ न होगी ॥ ३ ॥

दोहा—बन्दौ चरण सरोज गुरु, मुदमंगल आगार।
जेहिं सेवत नर होत हैं, भवसागर के पार ॥
गुरु के सुमिरण मात्र से, नाशत विघ्न अनन्त।
तासे सर्वारम्भ में, ध्यावत हैं सब सन्त ॥

(६०—कीर्तन)

स्वयं सच्चिदा नन्दा भूल करि भयो बन्दा ॥ टेक ॥ जैसे
शेर भेड़ बन बैठा, चरै घास वह गन्दा ॥ भूल ॥ १ ॥ मृग
के नाभि बसै कस्तूरी, नहिं जानत आनन्दा ॥ भूल ॥ २ ॥
जैसे सर्प मणी ऊजियारो, खाय कीट मति मन्दा ॥ भूल ॥३॥
तैसे मन आतम प्रकाश मे, भोगत विषया नन्दा ॥ भूल ॥४॥

कहैं विज्ञान रूप लखि अपना, तजि कोशन[१] को फन्दा ॥भूल५

(६१-कीर्तन)

ज्ञान गंगा नहा लो प्यारे मना, मेरे प्यारे मना ॥टेक॥ सत्संगति तीरथ में, मैल अपना छुड़ा लो प्यारे मना ॥ मेरे ॥ १ ॥ चार दिना के स्वाँसा, अपनी बिगड़ी बना ले प्यारे मना ॥ मेरे ॥ २ ॥ दान धरम कछु कर लो, अपनी आगे कमा लो प्यारे मना ॥ मेरे ॥ ३ ॥ भज विज्ञान शिव ओहम, मोह जग से हटा लो प्यारे मना ॥ मेरे ॥ ४ ॥

(६२-गारी)

चुन्दरी हमार साहेब तुमही पठायो, तीन गुनन की सँवारी ॥ रसना राम भजो ॥ १ ॥ पाँच पचीस रङ्ग पेवन्द लागे, चान्द सुरुज की किनारी ॥ रसना ॥ २ ॥ की चुन्दरो तोरे नइहरे से आवा, की रे सजन ससुरारी ॥ रसना ॥ ३ ॥ ना चुन्दरी मोरे नइहरे से आवा, नाहीं सजन ससुरारी ॥रसना॥४॥ अमर लोक में बसत हैं बिहौता, हुँवे से आयो तन सारी ॥ रसना ॥ ५ ॥ मैं धन लूमड़ि पहिरै न जान्यो, पिया दलि मलि

टिप्पणी १--अन्नमय कोश प्राणमय कोश, मनोमय कोश, ज्ञानमय कोश विज्ञानमय कोश ॥ अन्नमय और प्राणमय कोश के सन्धि को शब्दमय कोश मानते हैं। आनन्द मय कोश, प्रकाश मय, कोश। आकाशमय कोश यम नौ कोश का जनैया। जीव व्याप्य व्यापक से रहित न्यारा ही स्वरूप है, और नौकाल व नौ मन सूत व नौ कोश से रहित होना जरूरी है।

पहिरावें ॥ रसना ॥ ६ ॥ चुन्दरी पहिर धन निकरियों बज-रिया, लोग कहैं बनजारिन ॥ रसना ॥ ७ ॥ कहहिं कबीर चुन्दरी लखि पावे, अमर रहै ससुरारी ॥ रसना ॥ ८ ॥

(६३—गारी)

तुम काहे को कँहर मचायो, समधिन भलो रे भलो ॥टेक॥१॥ किन संग रसलिव किन संग बसलिव, किन संग रचलिव धमार ॥ समधिन ॥२॥ पाँच संग रसलिव पचीस संग बसलिव, काया संग रचलिव धमार ॥ समधिन ॥ ३ ॥ केकई होय राजा दशरथ का ठगलिव, रामा का दिहौ बनवास ॥ समधिन ॥ ४ ॥ सीता होय के रावण को ठगलिव, लङ्का कीन्ह्यो उजार ॥ समधिन ॥ ५ ॥ गोपी ह्वै श्रीकृष्ण को ठगलिव, घर घर नाच नचायो ॥ समधिन ॥६॥ नीम खियाय नीमी ऋषि को ठगलिव, कान्धे पर बलक चिठाय ॥ समधिन ॥ ७ ॥ पद्मिनी ह्वै के मछन्दर को ठगलिव, जप तप दिह्यो गँवाय ॥ समधिन ॥८॥ माता ह्वै के पालन कीन्ह्यो, जोइया ह्वै धन खायो ॥ समधिन ॥ ९ ॥ तीन लोक में ब्याहल तुमही, अजहूँ तू बारि कुँवार ॥ समधिन ॥ १० ॥ कहहिं कबीर सोई जन उबरे, जिन मानल बचन हमार ॥ समधिन ॥ ११ ॥

(६४—गारी)

जो मैं जनतेउँ सुरति देइया हो ऐसी हाल तुम्हारी, नान्हेन डरतेउँ मारि हो सब काम बिगारी ॥ १ ॥ बारिन होउँ तू तौ

बारी सुरति देइया, बारे से नयना लगाय हो तू तौ बारी सुरति देइया ॥ २ ॥ लम्बा घूँघुट[1] काढ़ि के चित चोर बसायो, औरन के सङ्ग सोय कै आपन पीवा बिसाऱ्यो ॥ ३ ॥ सार शब्द की आँगिया पचरङ्ग लागे सारी, मोतियन माँग भराय हो, लागी जरद किनारी ॥ ४ ॥ त्रिकुटी महल के ऊपरा यक गङ्गन[2] अटारी, पलटू साहेब सुख सेज हो गोविन्द बलिहारी ॥ ५ ॥ जो मैं जनतेऊँ सुरति देइया हो ऐसी हाल तुम्हारी ॥

(६५—कीर्तन)

आतम प्यारे को तैंने न जाना रे, रहा दुनियाँ में हरदम दिवाना रे ॥टेक॥ दोहा-काम क्रोध मद लोभ में, किया सबेरा शाम । निज स्वरूप को भूल के परखन लागे चाम ॥ सदा विषयों में रहा लपटाना रे ॥ आतम ॥ १ ॥ सुत दारा परिवार से, छूटे यक दिन साथ । ना जानी कौने घड़ी, काल पकड़ ले हाथ ॥ यासे भक्ती का गर ले खजानारे ॥आतम॥२॥ करना है सो जल्द कर, क्यों बैठा है मौन । सच्चा सद्गुरु खोज ले, राह बतावे जौन ॥ याशे साक्षी को ले पहिचानरे ॥ ॥ आतम ॥ ३ ॥ बाहर प्रभु को ढूँढ़ मत, हरदम तेरे पास । मन बुद्धि बाणी चित्तको, करता सदा प्रकाश ॥ विज्ञान का यही समझानारे ॥ ४ ॥

टिप्पणी १—लम्बा घूँघट कहिये लम्बा वासना । २—ब्रह्माण्ड में स्वाँसा चढ़ाय के ओंकार मुर्दा में फँसे सो जानिये, पारखपद प्राप्त न भया ।

(६६—ग़ज़ल)

जग में सत्सङ्ग बिना, मानव सम्मति गति पाना क्या जाने।
आसुरी प्रकृति के जो प्राणी, सत्सङ्ग में आना क्या जाने ॥टेक
जीवन में जितने दुख दिखते, वह निज दोषों के कारण ही।
पर जिसमें इतना ज्ञान नहीं, वह दोष मिटाना क्या जाने ॥१
उन्नति का साधन सेवा है, इससे ही आत्म शुद्धी होती।
पर लोभी मोही अभिमानी, सेवक पद पाना क्या जाने ॥२
गाँजा अफीम भाँग चर्स, बीड़ी सिगरेट पीने वाले।
व्यसनों को जो न छोड़ सके, मन बस में करना क्या जाने ॥३
जिनके मन में होता रहता है, आगे पीछे का जो चिन्तन।
वह प्रेम योग बिन परमेश्वर में, ध्यान लगाना क्या जाने ॥४
जो पहुँचे हुए सन्त जन हैं, उनसे पूछो पथ की बातें।
जो बारह बाट बीच में है, वह लक्ष दिखाना क्या जाने ॥५
दुख में जो त्यागी हो न सके, बन सके न सुख में जो उदार।
वह पथिक साधना मय जीवन को, सगल बनाना क्या जाने ॥६

(६७—ग़ज़ल)

वह जीवन क्या जिस जीवन में, जीवन को मुक्त बना न सके। वह अज्ञानी अभिमानी हैं, जो मन का मोह मिटा न सके॥ १ ॥ कोई बल मद में भूल रहे, ऊँचे पद पाकर भूल रहे। लेकिन वह शक्ति निरर्थक है, जो काम किसी के आ न सके॥ २ ॥ जो भ्रम वश भोगाशक्ति बने, जो अपने मन के

भक्त बने। यदि सबसे वह न विरक्त हुये, सत पथ में पैर बढ़ा न सके ॥ ३ ॥ जिस संगति से सद् ज्ञान न हो, कर्तव्य धर्म का ध्यान न हो। हम उसे कुसंगति क्यों न कहैं, जो हमें प्रकाश दिखा ना सके ॥ ४ ॥ मिटती है जिससे भ्रान्ति नहीं, मिलती है जिससे शान्ति नहीं। ऐ पथिक! उसे तुम त्याग करो, प्रियतम[१] तक जो पहुँचा न सके ॥ ५ ॥

(६८-ग़ज़ल)

आये हैं सन्त प्यारे घर में अहो हमारे, पूरब के भागि जागे दर्शन हुये सकारे ॥ टेक ॥ हैं सन्त निर्विकारी अज्ञान मोह हारी, ले थार पगु पखारि करि पान सिर चढ़ारे ॥ आये ॥ १ ॥ धन्य धन्य है भागि मेरी, खुशी मुझे घनेरी। त्रैबन्दगी है तेरी, त्रय ताप को नशारे ॥ आये ॥ २ ॥ माता पिता व भ्राता, राजा प्रजा जो नाता। सन्तो के सम सुदाता, नजरों में नाहिं मेरे ॥ आये ॥ ३ ॥ दुनियाँ सभी है अन्धी, पूजै वो देवि चण्डी। फोरो भरम की हण्डी, ज्ञानी हमें मिलारे ॥ आये ॥ ४ ॥ तन मन वो धनसे सेवा, करके वो पाँऊ मेवा। छल छिद्र छोड़ देवा, भक्ति में मन डटारे ॥ आये ॥ ५ ॥ लहि सत्य ज्ञान भारी, आसक्ति मन को मारी। आवा गवन निवारी, यह प्रेम पद गहारे ॥ आये ॥ ६ ॥

(६९-कजरी)

निर्गुण निराकार बिन देखले, झूठैं ध्यान लगैबा ना ॥ टेक ॥

टिप्पणी १-अपना चैतन्य स्वरूप ही हृदयनिवासी प्रियतम है।

दोहा—मन बुद्धि चित हङ्कार, इन्द्री सब जड़ रूप।
गोचर में आता नहीं, ऐसा है निज रूप॥

ध्याता ध्यान में है नहिं आता, झूठै ध्यान लगइब ना॥निर्गुण॥ ॥ १ ॥ निज स्वरूप से बाद सबै, विषय नाम गुण रूप। कहब सुनब सब विषय तम, मोक्ष ध्यान भ्रम कूप॥ देखब सुनब गुनब सब धोखा, वेदो में समझइबै ना॥ निर्गुण २॥ यदि हठ कर के मानिये, है मोक्ष जगदीश। कैसे तुम धारण किया, कैसा है प्रभीस॥ कारण[१] कर्ता के बिन देखले, कारज न लखि पइबे ना॥ निर्गुण॥ ३॥ प्रमाण और प्रमेय जो, उपमा और उपमेय। दोनों प्रथम प्रत्यक्ष है, तब उपमा यों देय॥ देते आकाश की उपमा, अब जहँ शून्य बतइबे ना॥ निर्गुण ४॥ व्यापक निराकार कुछ नाहीं, केवल गाल जइबै ना॥ निर्मल सीमा वन्त पदारथ ओ साकार देखैबै ना॥ निर्गुण॥ ५॥

७०—(कजरी)

देखो घटा बिना वारिद का दामिन दमकि रही है ना॥ ॥टेक॥ चम चम चमकि रही चहुँ ओरिया, झम झम बरसि रही है ना॥ छम छम छमकि रही पैजनियाँ, जनियाँ ठमकि रही है ना॥ देखो॥ १॥ गम गम गमकि रही अलबेली, पिया बिन तरसि रही है ना॥ काली नयनों में काजरवा सब

टिप्पणी १—झीने मोटे दोउ कष्ट सरूपा कारण नास्ति परे त्यहिं कूपा॥ चौपाई—सर्वज्ञ सागर पृष्ठ १४६॥

को गपकि रही है ना ॥ देखो ॥ २ ॥ बारिध बिना काम बरसाती कारज घटा देखाती ना ॥ मुख से मधुर गीत रुचि गाती, अभरण को चमकाती ना ॥ देखो ॥ ३ ॥ झमकाति चलै छमा छम गोरी, छता काम जगाती ना ॥ नाना गन्ध सुगन्ध अरगजा मलि मलि बदन लगाती ना ॥ देखो ॥ ४ ॥ योवन कसकि रही चोली में, कुछ कुछ सैन दिखाती ना ॥ ज्ञानी चतुर शिरोमणि सबको, नागिन चूस बहाती ना ॥देखो॥ ॥ ५ ॥ जब तक श्री[१] सेन[२] रहै बदन, तब लो खुब पुलकाती ना ॥ निर्मल बल बुद्धि हीन हुये जब, दुसरों को तकलाती ना ॥ देखो ॥ ६ ॥

(७१-कजरी)

मुनियाँ बनी हुई चुनमुनियाँ बश में सारी दुनियाँ ना ॥टेक॥ जब तू भरे छतीसो अभरन, शिर में देती बुनियाँ ना । शंकर थे कामारि कहाते, भूले देखि मोहनियाँ ना ॥ मुनियाँ ॥ १ ॥ मन्द मन्द मुसुकाती मनोहर, बोले मधुर बचनियाँ ना । अज हरिहर सनकादि सनन्दन, मोहे सुर नर मुनियाँ ना । मुनियाँ॥ २ ॥ जब तू भरन चली है पनियाँ, अबहिन बारी धनियाँ ना । बाजै पैरों की पैजनियाँ, मोहे चतुर चिकनियाँ ना ॥मुनियाँ॥ ॥ ३ ॥ ऊपर कोमल बचन सुनाती, अन्दर बनी नगिनियाँ ना । निर्मल दास जनियाँ के कारण, घर घर लगि अगिनियाँ ना ॥ मुनियाँ ॥ ४ ॥

टिप्पणी १—श्री कहिये सम्पति लक्ष्मी । २—विलासा भोगकरने का ताकत ।

(७२–चौताल)

गोरिया फिर ले मदन रस माती, खसम नहिं पाती ।।टेक।। गया प्रयाग द्वारिका काशी, जगन्नाथ गुण गाती ।। बद्रीनाथ केदार कष्ट करि, रामेश्वर कहँ जाती ।। बिरह रस माती, खसम नहिं पाती ।। १ ।। जंगल सिन्धु खोह गिरिवर में तपति ताप दिन राती ।। ग्राम ग्राम खोजै गलियन में, जहाँ तहाँ सिर नाती ।। खसम ।।२।। अष्ट धातु पत्थर पानी में, यन्त्र मन्त्र बरांती ।। मक्का मसजिद कबर शिवाला, जहँ तहँ हाँक लगाती ।। ।। खसम ।। ३ ।। वेद पुराण शास्त्र रचि रचि के, निज मनको भुलवाती ।। ब्रह्म जीव ईश्वर माया पुनि, स्वयं ब्रह्म बनि जाती ।। खसम ।। ४ ।। चौदह तबक आवरण सातो, परम धाम सुनि माती ।। निर्मल को गुरू सन्त मिलै जब, स्वतः रूप दिखलाती ।। अभय दिन राती, खसम नहिं पाती ।। ५ ।।

(७३–चौताल)

गोरिया रोय रोय करत गुजारा, नयन बहे धारा ।।टेक।। असन बसन भूषण बिनु अभरण, कलपि रही निशि बारा ।। ताते भारत भूमि दुखित अति, कष्ट अनेक प्रकारा ।।नयन।।१।। पशुवत् गुजर होत भारत के बीर्य, तेज बल हारा ।। अब कोई अपर परा नहिं चीन्हत, सब निज धर्म बिसारा ।। नयन ।।२।। वर्णाश्रमिक धर्म परि हरि सब, लोग हुये बे विचारा ।। कुमति कुचाल कपट भारत में, पूर्ण उदधि ललकारा ।। नयन ।। ३ ।।

भारत भूमि मुक्ति दातारा आज हुआँ जम द्वारा ॥ काम क्रोध ममता सब घट घट, कुमति कुफुर तकरारा ॥नयन॥४॥ निर्मल दास भारत आरत हो निश दिन करत पुकारा ॥ आज सहाय होहु करुणा निधि, आपद हरहु हमारा ॥ नयन ॥ ५ ॥

(७४-भजन)

गुरु सम दाता कोई नहीं, जग माङ्गन हारा ॥ टेक ॥ सात द्वीप नौ खण्ड में, गुरु देने वाला ॥ राजा परजा बादशाह सब हाथ पसारा ॥ गुरु ॥ १ ॥ कागज की नइया बनी, लोहेन सिर भारा ॥ केवट से परिचय नहीं केहि विधि उतरो पारा ॥ ॥ गुरु ॥ २ ॥ पानी पाथर पूजि के, तामे क्या पाया ॥ अरसठ के फल होत हैं, एक सन्त पवाया ॥ गुरु ॥ ४ ॥ सुगा पढ़ावत युग बिते, बोले टकसारा ॥ गुरु के बचन माने नहीं, धरि खात बिलारा ॥ गुरु ॥ ५ ॥ सन्तन सेवा न किहौ, मूरख पचिहारा ॥ निज स्वरूप चीन्ह्यो नहीं, हम प्रगट पुकारा ॥ गुरु ॥ ६ ॥ कहहिं कबीर एक कूप है, सुन्दर एक डोलै ॥ अन्धे को सूझे नहिं, घटही में बोलै ॥ गुरु ॥ ७ ॥

(७५-चेतावनी भजन)

सुधि करि लेहु बालेपन वाली बतिया ॥टेक॥ गरभ वास में जब तुम रहले, हरि से किहौ बिनतिया ॥ भाव भजन हम तुम्हरै करबै, तुम्हरै करबै भगतिया ॥ सुधि ॥ १ ॥ भीतर से

जब बाहर आयो, भूल गई सब बतिया ॥ गुरु न किहौ, साधु न सेयो, बीत गई सारी रतिया ॥ सुधि ॥ २ ॥ बाला पन बालैं मा बीते, ज्वानैं करकै छतिया ॥ काम क्रोध दस इन्द्री जागे, पूछवे न जतिया कुजतिया ॥ सुधि ॥ ३ ॥ तीनों पन याही में बीते, चौथे में घेरे मौतिया ॥ कहहिं कबीर जिभ्या के लम्पट, जम घर सहौ संसतिया ॥ सुधि ॥ ४ ॥

(७६—मङ्गल चेतावनी)

पढ़ो सुगा[१] सत्य नाम बैठि तन ताख में ॥ १ ॥ दिना चारि का रङ्ग मिलैंगे खाक में ॥ २ ॥ लावो तेल फुलेल काया यह चाम को ॥ ३ ॥ गरद बरद ह्वै जाय दुहाई सत्य नाम की ॥ ४ ॥ क्या लायो संसार, कहाँ ले जाहुगे ॥ ५ ॥ निशिदिन रह्यो है अचेत तमाचा खावगे ॥ ६ ॥ माला जाके हाथ, कतरनी काँख में ॥ ७ ॥ आग बुझी मत जान, दबी है राख में ॥ ८ ॥ कहहिं कबीर समुझाय, समुझ नर बावरे ॥९॥ लख चौरासी धार बहे मत जावरे ॥ १० ॥

(७७—भजन)

जो कोई खेतिया मन लावे ॥ टेक ॥ सुमति कुदार से बञ्जर गोड़ै, कुमति का खोदि बहावे ॥ ज्ञान के फरुहा से मेढ़ी

टिप्पणी १—हे कुन बस नर जीवो। अपने सत्य स्वरूप को चीन्ह कर उसी पर शान्ति होना ही पढ़ता है। निज स्वरूप को सत्यनाम कहते हैं।

बाँधे, पानी बहनन पावै ॥ जो ॥ १ ॥ उलटि पलटि के खेती जोतै, बहुविधि बाँह लगावे ॥ सुरति शिरोमणि हेंगा[1] नाधै, ढेला रहन न पावे ॥ जो ॥ २ ॥ सत्य विचार दुई अक्षर बोवे नित उठि खेत जमावे ॥ पाँचो[2] दूब पचीसो बथुआ, तीसो का खोदि बहावे ॥ जो ॥ ३ ॥ काम क्रोध दुइ गदहा छूटे, खेत चरन को धाये ॥ गुरु[3] मन्त्र कै तेगा बान्धे, भागत पैंड न पावे ॥ जो ॥ ४ ॥ कहहिं कबीर खालसा[4] बीघा केहिं बिधि पोत चुकावे ॥ एकइस हजार छः सौ मोहर नित दरबार पठावै ॥ जो ॥ ५ ॥ २४ घण्टे में २१६०० स्वाँसा चलता है।

(७८-भजन)

ठगिन तोर छल बल हमें न सोहाय ॥ टेक ॥ पारवती ह्वै शङ्कर का छल लिव, कूड़ी भंगिया दिहौ पियाय ॥ ठगनि ॥१॥ केकई ह्वै राजा दशरथ का छललिव, रामचन्द्र बन दिहौ पठाय ॥ ठगनि ॥ २ ॥ सीता ह्वै के रावन का ठगलिव, सेतु बाँधि दल लै गयो चढ़ाय ॥ ठगिन ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर हमरे लग आईं कुतिया की नाईं दिहो दुरियाय ॥ ठगिन ॥ ४ ॥

(७९-गजल)

यदी साधु सत्संग करते रहोगे, तो अज्ञान भव सिन्धु तरते

टिप्पणी—१-हेङ्गा को श्रवनी या पलटा कहते हैं जिससे खेत का ढेला फूटता है। २-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद। ३-सार शब्द निर्णय पारख। ४-जिसमें किसी का हक न हो उसे खालसा बीघा कहते हैं।

रहोगे ॥ टेक ॥ सदा चैन से दिन कटैंगे तुम्हारे, जो भक्ती व सत्य ज्ञान भरते रहोगे ॥ १ ॥ सकल शोक औ मोह फाँसी कटैगी, जो गुरुदेव मनसा विचरते रहोगे ॥ २ ॥ सभी पाप सञ्चित दवैंगे ए निश्चय, जो पारख परख रंग रंगतें रहोगे ॥ ॥ ३ ॥ जो पुरुषार्थ हिम्मत व श्रद्धा न छूटै, तो अविचल अमर हो अमर ही रहोगे ॥ ४ ॥

८०-गजल)

भरा सत्संग का दरिया नहा लो जिसका जी चाहै। जिगर से दाग पापों का छोड़ा लो जिसका जी चाहै ॥टेक॥ अनन्तों कल्प चौरासी के फन्दे में पड़ा था तू। पड़ी गल बीच की फाँसी निकाले जिसका जी चाहै ॥ भरा ॥ १ ॥ यहाँ प्रत्यक्ष दिखलाऊँ, स्वयम् अपरोक्ष दरशाऊँ। सरे मजलिस में इस मणि को, भजा ले जिसका जी चाहे ॥ भरा ॥ २ ॥ निराला हो जा तू सबसे, नहीं तू कम खुदा रब से। दास निर्मल का गाना है, जो गाले जिसका जी चाहे ॥ भरा ॥ ३ ॥

(८१-भजन)

विवेकी सन्त बसैं जेहिं देश ॥टेक॥ धनि वह गाँव ठाँव वह नगरी, अघ न रहै लव लेश ॥ विवेकी ॥ १ ॥ ऋद्ध सिद्ध जाके चरनन लोटैं, टहल करैं दरवेश ॥ विवेकी ॥ २ ॥ गंगा जमुना औ त्रिवेनी, सुरसरि बहै हमेश ॥ विवेकी ॥३॥ कहहिं कबीर सन्त की महिमा, कहि न सकैं श्रुति शेष ॥ विवेकी ॥४॥

(८२-भजन)

गुरु साहेब अइहैं कौने दिना ।।टेक दिनवा गिनत मोरी अंगुरी खियानी, पन्थ जोहत थाके नयना ।। गुरु ।। १ ।। अपने साहेब कै आवन सुनिकै, चन्दन छिरकौं घर अङ्गना ।। गुरु ।। ।। २ ।। हमरे साहेब कै साँच अटरिया, तेहिं चढ़ि बैठे साहेब सजना ।। गुरु ।। ३ ।। धर्म दास की अरज बीनती, चरण कमल निरखो नयना ।। गुरु ।। ४ ।।

(८३-भजन)

आये दीन दयाल दया कीना ।। टेक ।। दीन जानि साहेब मोर आये, बिमल रूप दर्शन दीना ।। आये १ ।। करि आरती प्रेम न्योछावर, तन मन धन अरपण कीना ।। आये ।। ।। २ ।। धर्म दास की अरज बीनती, सार शब्द सुमिरन कीना ।। आये ।। ३ ।।

(८४-भजन)

भला किहौ मितऊ१ आयो हो ।। टेक ।। बहुत दिनन कै कलप कल्पना, जेरा मोर जुड़वायो हो ।। भला ।। १ ।। आयो मितऊ सकल भ्रम छूटे, हम धन दर्शन पायों हो ।। भला ।।२।। कुछ दिन करो सन्त सेवकाई, तब कुछ अजमत पायों हो ।।

टिप्पणी १—जन्म मरण दुःख के छोड़ाने वाले नौकाल से रहित नौगुण सहित पारखो सन्त का नाम मितऊ है ।

॥ भला ॥३॥ धर्मदास की अरज बीनती, जीवन बन्दि छोड़ायो हो ॥ भला ॥ ४ ॥

(८५–भजन)

ना जानी मिलना कब होई ॥ टेक ॥ आवो सन्तो हिल मिल लेई, वाद विवाद करो जनि कोई ॥ ना ॥ १ ॥ सन्त बद बोई करो जनि कोई, बिछुड़े हंस बड़ा दुख होई ॥ ना ॥ २ ॥ पाँच तत्त्व का यह तन पायो, यक दिन जइहैं बिगोई ॥ ना ॥ ॥ ३ ॥ धर्म दास की अरज बीनती, गुरु के मिले सुख होई ॥ ना ॥ ४ ॥

(८६–भजन)

बैरन ह्वै गे रतिया मोरा सजन ॥ टेक ॥ जब से मिले आदि के सद् गुरु, तब से मोरा लागी लगन ॥ बैरन ॥ १ ॥ दिन नहिं चैन राति नहिं नींदा, अँसुवा ढुरै जैसे नदिया सवन ॥ ॥ बैरन ॥ २ ॥ कोइल कुहुँक हूँक हिया मारै, पिया २ पपिहा बोले बयन ॥ बैरन ॥ ३ ॥ धर्म दास की अरज बीनती, हे साहेब कब होइहैं अवन ॥ बैरन ॥ ४ ॥

(८७–भजन)

विराज़त जग में सन्त दयाल ॥ टेक ॥ जिनकी संगति अति सुख दायक, जम डरपै भय मानत काल ॥ बिराजत ॥१॥ दरशन से सकलो अघ नाशत, चरणामृत हरै त्रिविध ज्वाल ॥

॥ बिराजत ॥ २ ॥ महा प्रसाद देवन सब हरषित, कृपावन्त मोहिं करत निहाल ॥ बिराजत ॥ ३ ॥ तुम्हरी दया पूरण सुख पायों, नाहीं तो फिरत्यों बहुत बेहाल ॥ बिराजत ॥ ४ ॥

(८८–भजन) चेतावनी

सपन करि जान्यो यह जिन्दगानी ॥ टेक ॥ चार दिना की यह जिन्दगानी, नहकै फिरत उतानी ॥ सपन ॥ १ ॥ थोरे दिना की यह जिन्दगानी, जैसे हिलोरा पानी ॥ सपन ॥ ॥ २ ॥ जेहिं घर साधु सन्त नहिं जावें, तेहि कर भाग बिलानी ॥ सपन ॥ ३ ॥ जेहिं घर साधु सन्त कै सेवा, तेहिं कर पूर किसानी ॥ सपन ॥ ४ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, रहि जइहैं नाम निशानी ॥ ५ ॥

(८९–भजन)

कठिन दुख पायों मन तेरे सङ्ग ॥टेक॥ निशि दिन विषया काम सतावे, निशि दिन निरखै अंग ॥ जहाँ जहाँ जाऊँ तहाँ चलि जावे, शीत घाम सहै अंग ॥ कठिन ॥ १ ॥ उज्जल भूमि कबहुँ नहिं बैठेव, नहिं कीन्ह्यो सत्संग ॥ कबहूँ न किहौ सन्त कै सेवा, नाहीं नहान्यो गंग ॥ कठिन ॥ २ ॥ निशि दिन यह मन उड़ा घुमत है, जैसे उड़ै तुरंग । छुटी डोर यह चुके खेलारी उड़िगा जैसे पतंग ॥ कठिन ॥ ३ ॥ कितनो खिलारी को वश कीनो, कितनो कीन्हो तंग ॥ तुलसीदास मनहिं को घोटा, ज्यस कूड़ी मे भंग ॥ कठिन ॥४॥

(६०-भजन) चेतावनी

चदरिया ह्वै गे बहुत पुरानी, अजहूँ चेत अभिमानी ॥ टेक ॥ अजब जोलाहे चादर बीनी करम सूत कै तानी ॥ सुरति निरति कै भरनी दीनो, तब सबके मन मानी ॥ चदरिया ॥ १ ॥ मैली दाग परे पापन के विषयन में लपटानी ॥ ज्ञान के साबुन लाय न धोयो, सत्संगत की पानी ॥ चदरिया ॥ २ ॥ भई खराब आब गई सारी, लोभ मोह में सानी ॥ ऐसो ओढ़त जनम सिरानी, भली बुरी नहि जानी ॥ चदरिया ॥ ३ ॥ शंका मानि जानि जिय अपने, है यह वस्तु बिरानी ॥ कहहिं कबीर यह राखु जतन से, बहुरि हाथ नहिं आनी ॥ चदरिया ॥ ४ ॥

(६१-भजन)

चदरिया बीनी, झीनी झीनी ॥ टेक ॥ आठ मास दस बीनत लागे, पाँच तत्त्व गुण तीनी ॥ चदरिया ॥ १ ॥ इङ्गला पिङ्गला नरी भरत हैं ठोंक ठोंक सुख मन बीनी ॥ चदरिया ॥ २ ॥ ई चादर सुर नर मुनि ओढ़े, ओढ़ि मलि कै दीनी ॥ चदरिया ॥ ३ ॥ साहेब कबीर जतन से ओढ़े, ज्यों कै त्यों धै दीनी ॥ ४ ॥

(६२-भजन प्रभाती)

जागु जागु जञ्जाली जेरा, यह तो मेला हाट का ॥ धोबी घर कै कुत्ता होइहो नहिं घर के नहिं घाट का ॥ टेक ॥ खानिन अमि अमित

दुख पायो, मानुष तन यह हाथ का ॥ माथे भार धर्यो ममता का, मानो घोड़ा भाँट का ॥ जागु २ ॥ १ ॥ दुनियाँ दौलत माल खजाना, जामा दरकस पाट का ॥ सोने रूप भण्डार भरे हैं, धरा सन्दूखा काठ का ॥ जागु २ ॥ २ ॥ मातु पिता सुत बन्धु सहोदर, कुटुम्ब कबीला ठाट का ॥ अन्तके बेरियाँ चला अकेला मानो बटोही बाट का ॥ जागु२ ॥ ३ ॥ आये सन्त आदर न कीन्ह्यो धन्धा किहो घर घाट का ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, भयो किरौना खाट का ॥ जागु २ ॥ ४ ॥

(६३-भजन प्रभाती)

क्या सोया गफिलत के माते, जागु जागु नर जागु रे ॥टेक॥ सुन्दर चोला बना अमोला चढ़े दाग पर दाग रे ॥ जैसे चिड़िया रयन बसेरा चले सबेरे त्याग रे ॥ क्या ॥ २ ॥ कर्म केचुली चढ़ी चित्त पर, भयो मनुज से नाग रे ॥ चीन्हत नाहीं सजन सुख सागर बिना प्रेम वैराग्य रे ॥ क्या ॥३॥ गुरु सुमिरे सो हंस कहावे, कामी क्रोधी काग रे ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, पूरण प्रगटे भाग रे ॥ क्या ॥ ४ ॥

(६४-रागपीलू गजल ताल लावणी)

साधू का भेष धर के ज्ञानी जो तुम कहावो ॥ अतिशय

उदार अपना अन्तःकरण बनावो ॥टेक॥ करतब्य अपना पालो यम नियम को संभालो ॥ दुरमति को दूर टालो, सुकृत सदा कमावो ॥ साधु ॥ १ ॥ एक सत्य व्रत धारी कामादि रिपु निवारी ॥ बनि शुद्धि ब्रह्मचारी, विषयों से मन हटावो ॥ साधु ॥ २ ॥ पैसा न पास जोड़ो, आशा जगत की छोड़ो ॥ त्रिष्णासे मुख को मोड़ो, माया में मत लोभावो ॥ साधू ॥३॥ निज कर्म की कमाई, यह तिल घटै न राई ॥ दुःख सुख को पाय भाई, मति धैर्य को डिगावो ॥ साधू ॥ ४ ॥ उपकार को सभी के, कर लो बिचार जी के ॥ मत भूल कर किसी के, न दिल को कभी दुखावो ॥ साधू ॥ ५ ॥ विष का न स्वाद चाखो, मुख से न झूँठ भाखो ॥ जीवों पै दया राखो, उपदेश सद् दृढ़ावो ॥ साधू ॥ ६ ॥ फिरते हो क्यों भुलाने, बिन गुरु कबीर जाने ॥ पढ़ि पढ़ि के पोथी पाने, बकवाद मत बढ़ावो ॥ साधू ॥ ७ ॥

(६५—झूलने)

आलिम फाजिल नाम धराये, इन्द्री वश नहिं कीन्हा है।
जीभ[१] लिङ्ग के स्वाद न छूटे, धन के सदा अधीना है॥
रोजा निमाज कुरान का पढ़ना, वृथा हुआ मदीना है।
रामलाल विन पाँच[२] के छोड़े, पास खुदा नहिं चीन्हा है॥

टिप्पणी—१—दत्तात्रेयी ने चील्ह के मुख में मांसु लिये उड़ते देखा और उसके पीछे बाज कौआ बकुलादि खेद रहे हैं कि हम छीन कर

(६६—भजन प्रभाती)

बेला अमृत गया आलसी, सो रहा बनि अभागा। साथी सारे जगे, तू न जागा ॥टेक॥ झोलियाँ भर रहें भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीवन सँभाले ॥ रंक राजा बने ज्ञान रस में सने, कष्ट भागा ॥ साथी ॥ १ ॥ कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया,

खा लेवें मगर चील्ह को कहीं अराम न मिलने से मुख का मांसु जमीन में गिरा दिया तब सुख से एक पेड़ के डगाली पर जा बैठा, बाकी पक्षी उसी मांसु में लड़ झगड़ कर खाने लगे तब दत्तात्रेयी यह दशा देखकर विचार करते हैं कि सोना चाँदी, स्त्री यह दो मांसु हमारे पास नहीं रहैंगे तो हम भी सुख से जहाँ तहाँ विचर कर शान्ति से भजन करैंगे यानी चोर छिनार का भय नहीं रहैगा इसलिये चील्ह का गुण ग्रहण कर गुरू माना। कुँवारी कन्या के घर पाहुना आये थे चावल घर में न था धान कूटने पर चूड़ी का आवाज हुआ तब कन्या ने एक २ चूड़ी फोरती गई जब हाथ में एक २ चूड़ी रह गई तब नहीं आवाज हुआ पाहुना को भोजन खिला कर इज्जत के साथ बिदा किया दत्तात्रेयी यह दशा देखकर विचार करते हैं कि साधु को भी अकेला रहने से झगड़ा ठोकर नहीं लगैगा, सिंह अकेला बन रमे, पलक २ करै दौर। जैसा बन है आपना, वैसा बन है और॥ बीजक साखी ३२८॥ सर्प बिल नहीं खोदते जहाँ तहाँ बिल में रह जाते हैं और निकल भी जाते हैं जो अधिक निवास बिल में करते हैं वह मारे छेदे जाते हैं यह दशा सर्प का देखकर दत्तात्रेयी विचार करते हैं कि साधु को भी कुटी नहीं बनाना चाहिये, सन्त सुखी विचरन्त मही। देश विदेश हौं फिरा, गाँव गाँव की खोरि। ऐसा जेयरा न मिला, कि लेवे फटक पछोरि॥ बीजक साखी ३१६। ऐसे २ चौबीस गुरु दत्तात्रेयी ने किये, १५ पृष्ठ सज्जन काठिका में २४ गुरु का नाम देखिये और सन्तों से उसका अर्थ बूझि कर गुण ग्रहण करिये। २—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

आलसो बन के हीरा गँवाया ॥ उलटी हो गई मती, करके अपनी छती विष में पागा ॥ साथी ॥२॥ धर्म बेदों का देखा न भाला, बेला अमृत गया न सँभाला ॥ सौदा घाटे का कर हाथ माथे पै धर रोने लागा ॥ साथी ॥ ३ ॥ देश अब तक न तूने विचारा, शिर से ऋषियों का ऋण न उतारा ॥ हंस का रूप था गँदला पानी पिया बनके कागा ॥ साथी ॥४॥ सीख गुरु की अभी मान ले तू, जानने को जो है जान ले तू ॥ भूमि निज का समझ, देह अभिमान तजि हो विरागा ॥ साथी॥५॥

(९७) वेदाँत छन्दावली अवधूत शिरोमणि श्रीशुकदेवजीका वचन।

पृथ्वी नहीं जल भी नहीं, नहिं अग्नि तू नहिं है पवन।
आकाश भी तू है नहीं, तू नित्य है चैतन्य धन ॥
इन पाँच का साक्षी सदा, निर्लेप है तू सर्व पर।
निज रूप का पहचान कर, हो जा अजर हो जा अमर ॥ १ ॥

मैं शुद्ध हूँ मैं बुद्ध हूँ, ज्ञानिग्नि ऐसी ले बला।
मत पाप मत सन्ताप कर, अज्ञान बन को दे जला ॥
ज्यों सर्प रस्सी माँहि, जिसमें भासता ब्रह्माण्ड भर।
सो बोध सुख तू आप है, हो जा अजर हो जा अमर ॥ २ ॥

(६८–भजन)

नशवा मटिया मा मिलइहैं, तू न खायो बलमू ॥टेक॥ खायँ अफीम बेचैं ज़मींदारीबचै न घर कै खटिया। पाँच हजार

पर आपै बेचैं सात वर्ष कै बिटिया ॥ बुढ़वा दमदा हैं आवइया ॥ ॥ तू न ॥ १ ॥ एक गन्जेड़ी घर से निकला लै औरत की साड़ी ॥ नौ आने का बेच लिया है, किया बजार तयारी, तन कै लुगरी ए बेचइहैं ॥ तू न ॥ २ ॥ एक चर्स का पीने वाला भारी दम्म लगाई ॥ लटपटाय के गिरा भूमि पर, मानों मिर्गी आई, एक दिन जनवाँ ए गँवइहैं ॥ तू न ॥ ३ ॥ एक शराबी पीने वाला नाली में भहराई ॥ मल सूत्र सब मुख में भरिगा कहै औरत का माई, इज्जत धर्मा ए गँवइहैं ॥ तू न ॥४॥ एक तमाखू पीने वाला, पीतै मा औंघाई ॥ चिलम गिरा है पलंग के ऊपर, गद्दा जरै रजाई, यक दिन अगिया ए लगइहैं ॥ तू न ॥ ॥ ५ ॥ कोई पान में कोई चून में सुर्ती सब का प्यारी ॥ कहहिं कबीर सुनों हो सन्तों, सुनये नर औ नारी, अगिला दँतवा ए सरइहैं ॥ तू न खायो बलमू ॥ ४ ॥

(भजन)

सती करो साँचे से मोजरा ॥ टेक ॥ राँड़ सिंगार करैं केहि ऊपर, आँखिन दै कजरा ॥ देकर कजरा नगर में घूमै, लोग करैं रगरा ॥ सती ॥ १ ॥ कुम्भजा पुरुष नारि उदमादी, संस्कइन घर बिगरा ॥ रानि परोसिन वैर बढ़ावैं, मानो घर उजरा ॥ सती ॥ २ ॥ वेश्या कहै सती हम होबै, कादर रन पछरा ॥ मोहड़ा जुटे दोनों दल भागे, लिहा नरक तोबड़ा ॥

॥ सती ॥ ३ ॥ गृही कहै भक्त हम करबै, नित कूटै चमड़ा ॥ कहहिं कबीर गाँठि बिन छूटे, कौन सख्स उबरा ॥ सती ॥४॥

(१००–भजन)

हरि जन चारि बरन से ऊँचा ॥ टेक ॥ ना मानो तो साखि देखाऊँ, सेवरी के फल खायो जूठा ॥ हरि ॥१॥ राजा युधिष्ठिर यज्ञ रचिन है, बाजै न घण्ट बिप्र चले रूठा ॥ हरि ॥ ॥ २ ॥ सुपच भक्त जब ग्रास उठावें, बाजत घण्ट गंगन चढ़ि ऊँचा ॥ हरि ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर चारिउ बरन हैं नीचा, सुपच भक्त सबन से ऊँचा ॥ हरि ॥ ४ ॥

(१०१–गजल)

आशिक़ या माशूक होना, क्या गरज वैराग्य में । साँच को क्या चाहिये ज़लना बिरह की आग में ॥ टेक ॥ देह का बर्तमान तो बर्ते सहज प्रारब्ध में । फिर गर्ज क्या है किसी की शहन शाही निज शान में ॥ १ ॥ आश कैवल्य मुक्ति का है सूक्ष्म बीज देह धरने का । जगत से ब्रह्म होने का अभ्यास है खानी जाने में ॥ २ ॥ अज्ञ तज्ञ दो भाग है सिद्धान्त बानी वेद का । जिनको है दृढ़ वैराग्य उनको क्या गरज इस राग में ॥ ३ ॥ धन धाम झूँठा है सकल न बासना बैकुण्ठ में । अर्थ धर्म औ मोक्ष का सुख तुच्छ है वैराग्य में ॥ ४ ॥ न्यामत मिले टुकड़े मिले मखमल मिले या गूदड़ी । बन बाग में शमशान

में क्या फिकर है वैराग्य में ॥ ५ ॥ फिक्र का फाका किया औ जिक्र है निज बोध का। पूरण सदा सुख साहिबी दिल पाक है वैराग्य में ॥ आशक ॥ ६ ॥

(१०२–शब्द गुरु-वन्दना)

वन्दनिये गुरु देव! तुमको, वन्दनिये गुरु देव ॥ टेक ॥
काल[1] जाल[2] के फन्दा भारी, परख लखायो भेव ॥ १ ॥
बेद शास्त्र सब खोजत हारे, मर्म न जानत केव ॥ २ ॥
गुरु समान और को दाता, ताको करिये सेव ॥ ३ ॥
साहेब कबीर अभय पद दाता, पूरण परख ससेव ॥ ४ ॥

(१०३–शब्द)

धन्य! धन्य! भाग जागे, साधु आये पाहुना ॥ टेक ॥
प्रेम प्रीति गङ्गोदक लेके, तिन की चरण पखारना।
चित चन्दन चोवा अति उत्तम, अंग अंग लगावना ॥ १ ॥
बहु प्रकार नाना विधि व्यञ्जन, भोगहु सन्त लगावना।
महा प्रसाद उनहीं को पाके, आप सबहिं अघावना ॥ २
श्रद्धा भक्ति पुष्प की माला, सन्तन गल पहिरावना।
दोउ कर जोरी विनय स्तुति करि, पुनि पुनि मस्तक नवावना ॥३॥
पूरण प्रकाश कबीर गुरु पाये, दूजा नहीं कछु भावना।
निरखि परखि सत्संगति करना, जग में बहुरि न आवना ॥ ४ ॥

टिप्पणी–१–गुरवा लोग नौकाल की माया में अटकाने से काल हैं। २–खानी बाणी जालका फन्दा जीव पर लगा है सो जानि कर त्यागिये।

(१०४-ग्रन्थ अगमनिगम बोध पृष्ठ ४६ का प्रमाण)

पारवती जी ने पूछा कि कबीर किसको कहते हैं उसके उत्तर में शिव जी ने कबीर साहेब की स्तुति में सौ एक श्लोक कहे हैं उस ग्रन्थ को कबीर एकोत्तर कहते हैं जो साम वेद और पाताल खण्ड में है उसमें से यह तीन श्लोक लिखे हैं।

श्लोकः—

यः सुख सागरो दाता बीज ज्ञानं तथैव च।
आद्यन्त रहितो लोके यः कबीर इहोच्यते॥ १॥
कलांशेन गतो भूम्यां विलासा सत्य संज्ञकः।
दीनोद्धारे तिदक्षः कबीर संज्ञः इहो च्यते॥ २॥
कर्ता को न्यघ्य कारी च व्यक्ताव्यक्तः सनातनः।
रमते सत्य लोके यः स कबीर इहोच्यते॥ ३॥

अर्थात्—जो सुख का समुद्र दाता कारण ज्ञानवान आदि और अन्त से रहित हैं, लोक में वह कबीर नाम से कहा जाता है॥ १॥ जो भूमि में कला के अंश रूप से अविनाशी हुये हैं जिनका सत्य ऐसा नाम है। दीनों के उद्धार करने से समर्थ हैं वे कबीर इस नाम से लोक में विदित हुए हैं॥ २॥ जो कर्ता रूप हैं न्याय कारी सनातन तत्त्व हैं जो व्यक्त भी हैं अव्यक्त भी हैं सत्य लोक में रमण करने वाले हैं उन्हें कबीर कहा जाता है॥ ३॥

(१०५–सत्योपदेश हेतु-छन्द)

है यह सत्योपदेश हित कर जीव के सुख सार हो ।
पाप सकलो नाश करि भवधार से ह्वै पार हो ॥
सुरत स्वतः रक्षक सदा, गुरु सन्त बच आधार हो ।
श्रवण मनन प्रारब्ध तक, करते रहो निरवार हो ॥ १ ॥

साखी

सत्योपदेश संग्रह किये, वाणी सन्त निरधार ।
शोध बोध गुरु की कृपा, सार गहे भव पार ॥ २ ॥

॥ सत्योपदेश शतक ॥

दोहा ।

नमों नमों सतगुरु चरण, नाशक सकल कलेश ।
जिनकी कृपा कटाक्ष से, बरणों सत उपदेश ॥ १
चार बेद षट् शास्त्र में, बात मिली है दोय ।
दुख देने दुख होत है, सुख देने सुख होय ॥ २
ग्रन्थ पन्थ सब जगत के, बात बतावें तीन ।
सन्त हृदय मन में दया, तन सेवा में लीन ॥ ३
तन मन धन से कीजिये, निश दिन पर उपकार ।
यही सार नर देह में, बाद बिबाद बिसार ॥ ४
चींटी ते हस्ती तलक, जितने लघु गुरु देह ।
सब से निर्बैरहि गहो, दया दृष्टि है येह ॥ ५

गुरु सन्त सो पूज्य हैं, जेहिं स्वरूप को ज्ञान।
पुरुषोत्तम सो सन्त जन, करु सेवा सन्मान ॥६
तिलक छाप माला जटा, भगवे पट तन छार।
डण्ड कमण्डल भेष तन, उदर भरन व्यवहार[१] ॥७
जाके ज्ञान बिराग धन, यथा लाभ सन्तोष।
सीधा चलै सो साधु है, ज्ञानी राग न रोष ॥८
परा[२] और अपरा[३] कहो, दो बिद्या जगमाहिं।
जानै त्यागे जो इन्हें, पण्डित कहिये ताहिं ॥९
नीच ऊँच लो जीव को, जानि स्वजाति समान।
दुख न देवे काहु को, जहाँ चलत बस जान ॥१०
लोक और परलोक के, सुख हित जेहिं उपदेश।
सत गुरु ताको जानिये, काटत भ्रम कलेश ॥११
तन मन धन अर्पण करै, तजे लोक कुल लाज।
गुरु अज्ञा मस्तक धरे, शिष्य सुधारे काज ॥१२
काम क्रोध अरु लोभ मद, मिथ्या छल अभिमान।
इनसे मन को रोकनो, साँच ब्रत पहिचान ॥१३
मन्द क्रिया से तन रोकै, मन सब तजै कुचाल।
तन ताड़न मन को दमन, यह तप परम बिशाल ॥१४

टिप्पणी-१-परख परखावन जीवन केरा॥ यह व्यवहार यथारथ निवेरा॥ पञ्चग्रन्थी॥ २-उलटा, विपरीत, बड़ाई के लिये जो बिद्या सीखी जाती है जैसे पानी का दूध घी देख पड़नादि। ३—ईश्वर मुर्दा शून्य के प्राप्त निमित्य कर्म योग उपासनादि करके धोखे में पड़ना।

श्वास श्वास भूलै नहीं, गुरु का भय अरु प्रेम।
यही परम तप जानिये, देत कुशल अरु क्षेम॥ १५
एक टेक गुरु देव की, छाड़ि सकल की नेह।
तन मन बच जेहिं के रहै, परम भक्ति है येह॥ १६
जितनी चाह अचाह की, होत अधिकता चीत।
उतनी सुख दुख जानिये, मन से जीव को मीत॥ १७
मान धाम धन नारि सुत, इन में जो आसक्त।
परम हंस जो शान्ति मन, लक्षण यही विरक्त॥ १८
जहाँ मान मत्सर[1] मैथुन, मदिरा मिथ्या द्यूत[2]।
सो कुसङ्ग उपहास वह, तहाँ न जाय सपूत॥ १९
न्याय विवेक गुणज्ञता, विद्या शील स्वरूप।
धीरज सत्य उदारता, समिता बसन[3] अनूप॥ २०
प्रिय भाषी पुनि नम्रता, आदर प्रीत विचार।
लज्जा क्षमा अयाँचता, ये भूषण उर धार॥ २१
भाग पराया त्यागि के, जो आपन कर लेत।
सो न किसी से दुख लहे, औरन दुख नहिं देत॥ २२
जिस की सब से मित्रता, तिनको शत्रु न कोय।
आप भलो सब जग भलो, बुरा भलो नहिं कोय॥ २३
पर नारी रत पुरुष जो, पर पति रत जो नारि।
शान्ति न पावे एक क्षण, चिन्ता शोक अपारि॥ २४

टिप्पणी-१ मत्सर कहिये ईर्षा। २-द्यूत कहिये जुवा खेलना। ३-बसन कहिये वस्त्र।

शीश सफल सन्तन नमैं, हाथ सफल गुरु सेव।
पाँव सफल सतसङ्ग गति, तब पावे कछु मेव ॥ २५
तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र कर दान।
मन पवित्र गुरु भक्ति करि, होत त्रिविधि कल्यान ॥ २६
धृक मानुष तन भक्ति बिन, धृक मति बिना विवेक।
विद्या धृक निष्ठा बिना, धृक सुख बिन गुरु टेक ॥ २७
धन पावे कछु दान कर, अथवा कीजे भोग।
दान भोग बिन धन गहै, बृथा बटोरत रोग ॥ २८
अस्थि[1] मांस मल मूत्र त्वक[2], सब देहन के बीच।
गुण कर मन कर पूज्य है, ना तरु जानो नीच ॥ २९
जाके दृग लज्जा नहीं, वाक्य विचल हो जास।
तासो धरो न आश कछु, त्यागि सकल बिश्वास ॥ ३०
बेद पुराण विवाद में, मत अरझो मतिमान।
सार गहै सब ग्रन्थ की, अपनी रुची समान ॥ ३१
पर दूषण में मन धरे, पर भूषण में बैर।
सो मलिक्ष मूरख अधम, धरत नरक में पैर ॥ ३२
मात पिता बनिता[3] तनुज[4], जाके सब अनुकूल।
देह अरोग्य बिचार धन, यही स्वर्ग मति भूल ॥ ३३
बिद्या वल धन रूप यश, कुल सुत बनिता मान।
सभी सुलभ संसार में, दुर्लभ निज को ज्ञान ॥ ३४

टिप्पणी-१-अस्थि कहिये हड्डी। २-त्वक कहिये चमड़ा। ३-बनिता कहिये स्त्री। ४-तनुज कहिये पुत्र।

मात पिता जो जो करत, पुत्र सेव उपकार ।
ताको जो भूलत तनय[१], सो गर्दभ[२] निरधार ॥ ३५
प्रिय भाषी शीतल हृदय, सुन्दर सरल उदार ।
सो जन ऐसो जगत में, तासो सब को प्यार ॥ ३६
पूरण भय परिणाम को, जाके मन में होय ।
गुप्त प्रगट की देह से, पाप करत नहिं कोय ॥ ३७
सुख को मूल बिचार है, दुःख मूल अविचार ।
सो भाष्यो संक्षेप में, चार बेद को सार ॥ ३८
मिले बुराई मोल कै, पुनि जग निन्दा होय ।
करत भलाई यश मिले, मोल न लागे कोय ॥ ३९
उदय अस्त लो मेदनी[३], जो तेरे वश होय ।
कौन काम मन समझ तूँ, जग में जीवन दोय ॥ ४०
चोरी हिंसा अरु त्रिया, निन्दा मिथ्या गालि ।
क्रोध ईर्षा मान छल, तन बच मन से टालि ॥ ४१
स्नान दान शुभ जीव का, शिक्षा सत्य सु भाख ।
शौरज[४] न्याय प्रीति दया, तन मन बच जे राख ॥ ४२
धन भोगों की खानि है, तन रोगों की खान ।
ज्ञान सुखों की खानि है, दुक्ख खानि अज्ञान ॥ ४३
धीर परखिये विपत्ति में, मति परखिये भीर ।
ज्ञान परखिये हानि में, यती योषित के तीर ॥ ४४

टिप्पणी—१—तनय कहिये पुत्र । २—गर्दभ कहिये गदहा । ३— मेदनी कहिये पृथ्वी । ४—शौरज कहिये शूरता ।

तृष्णा चिन्ता दीनता, माया ममता नारि।
ये पट् डाकिन पुरुस का, पीवत रुधिर निकारि॥ ४५
शान्ति दया समता क्षमा, मुदिता[1] विद्या प्रीति।
ये जननी वत पुरुष की, रक्षा करे सुनीति॥ ४६
बचन कहो संसार में, सबकी बुद्धि समान।
जहाँ बुद्धि पहुँचे नहीं, तहाँ न करो बखान॥ ४७
आये स्थान प्रणाभ धन, आसन भोजन वारि।
घर आये को दीजिये, भेंट यथा अधिकार॥ ४८
तप तीरथ जप यज्ञ को, यही परम सिद्धान्त।
दुख न दीजै काहु को, सब मन राखै शान्ति॥ ४९
अपने पर के दुख सुख, जब लखि लेत समान।
पाप न रहै शरीर में, राग द्वेष है हान॥ ५०
जो अपने सुख के लिये, औरों को दुख देत।
सुनिये जो गुरु ज्ञान से, है मति मन्द अचेत॥ ५१
पर धन गुण यश रूप में, होत ईर्षणा जाहिं।
जलत रहे दुख अग्नि में, कौन बचावे ताहिं॥ ५२
लघुन सङ्ग लघुता मिले, गुरता गुरु जन सङ्ग।
बाल सङ्ग महि नाश हो, नारि सङ्ग मति भङ्ग॥ ५३
ब्याधि कष्ट है देह को, तेहि औषध से टार।
आधि[2] कष्ट है चित्त को, ताको हरै विचार॥ ५४

टिप्पणी–१–मुदिता कहिये प्रसन्नता। २–आधि कहिये मन के रोग नौकाल की लगी है सो नौ से रहित हो स्वस्वरूप पर ठहरिये।

अति उदारता कष्ट है, अति सङ्कोच अनर्थ।
यथा योग्य बर्तें दोऊ, सो जन सदा समर्थ ॥ ५५
भाषण-भाषण के समय, धरे समय बिन मौन।
ऐसे बुद्धि निधान को, जीत सकत है कौन ॥ ५६
बचन करत नाचत सदा, कर दृग मस्तक नाक।
शोभा न पावत सभा में, ज्यों हंसन में काक ॥ ५७
जागन सोवन के समय, शुभ अरु अशुभ बिचार।
काह किये क्या करैंगे, तब सुख मिले अपार ॥ ५८
अति कठोर ऊँचो अधिक, मान युक्त जेहिं बोल।
सो जन सब संसार की, लेत शत्रुता मोल ॥ ५९
विद्या बुद्धि विवेक बल, यद्यपि होय अपार।
मन मथ रहे जागे बिना, जहाँ एक नर नार ॥ ६०
अपने अपने अर्थ को, सब जन सब के दास।
बिना अर्थ अपनो कौन, कोई न बैठे पास ॥ ६१
जहाँ सूमता चाहिये, तहाँ न होवे क्रूर।
जहाँ क्रूरता हो भली, करै सूमता दूर ॥ ६२
बिद्या उत्तम बुद्धि बल, रूप तथा सुयोग।
ये षट् कारण धन लाभ के, जानत हैं सब लोग ॥ ६३
मिथ्या हार बिहार से, तन में उपजत ब्याधि।
बिन बिचार जो बर्ति चलै, मन में उपजे आधि ॥ ६४
जन्म मरण त्रय ताप को, भय न होय यदि चीत।
गुप्त देश में पाप से, कोई न बचते मीत ॥ ६५

अज्ञानी तजि देत अघ, भय कर लालच पाय।
ज्ञानी तजे विचार बल, ताको सहज स्वभाय ॥ ६६
धर्म शास्त्र है नाम जेहि, सो है अपनो चीत।
शुभ औ अशुभ विवेक सब, उससे सीखो मीत ॥ ६७
होत अङ्ग उपाङ्ग[1] बल, कवि याचत मति[2] मान।
भीख माङ्गने से अधिक, अधम वृत्ति नहिं आन ॥ ६८
बिन कीन्हे उपकार कछु, जो भोगत पर भोग।
सो कृतघ्न मति मन्द ठग, बहकाये सब लोग ॥ ६९
जल थल पर्वत रूख तृण, मानुप पशु खग खान।
गुण ग्राहक सब से गहे, शिक्षा गुरु वत् जान ॥ ७०
शक्ति हीन छोड़ै नहीं, निज कुल देश लकीर।
शक्ति वान जिस दिश चलै, पीछे चले समीर ॥ ७१
धन सुत तिय युत बहुत जन, दुखी रहै दिन रैन।
बिन अनादि के ज्ञान बल, निश दिन राखै चैन ॥ ७२
मात पिता सुत भ्रात तिय, गुरु बाँधौ पुनि मित्र।
कर्म बिछोरत सबन को, निज कर्तव्य चरित्र ॥ ७३
जिस कारज के किये ते, अन्त होत पछताप।
तासु आरम्भ मत कीजिये, आदि बिचारो आप ॥ ७४

टिप्पणी १—उपाङ्ग कहिये कल्पित देवी आदि से अङ्ग (मुख) उपाङ्ग (बुद्धि) आदि की याचना करता है। २-मति कहिये बुद्धि को।

जौ कारज करनो नहीं, कहो न ताको भूल।
जो कह कर करतो नहीं, को जन हलौं तूल[१] ॥ ७५
अति नीचो गति होइये, अति ऊँचो मति होय।
मध्य भाव में बर्तिये, शोक न व्यापै कोय ॥ ७६
निन्दा करै जो आन की, सो जन निन्दित आप।
पर दूषण में चित्त धरै, पावत बहु सन्ताप ॥ ७७
भोग सकल संसार से, प्रथमै सुधा समान।
अन्त हला हल होत है, बर्तें समुझ सुजान ॥ ७८
बिषय सभी विष रूप है, पर विशेष व्यभिचार।
तन मन धन अरु मान हरे, लज्जा हरे विचार ॥ ७९
कहित[२] बहित[३] पुनिरहित[४] में, जाको देखो शुद्ध।
सो सत्सङ्गी जानिये, नहिं तो परम अशुद्ध ॥ ८०
पूरण मूत्र पुरीष[५] से, यहि तन अशुचि भण्डार।
कहत शुद्ध जो देह को, सो जन निपट चमार ॥ ८१

टिप्पणी—१-तूल कहिये रुई, २-प्रथम कहित का सुधारना, कहित बोलने का नाम है बहुत मत बोलो इसमें प्रतिष्ठा भङ्ग होती है बहुत बोलने वाले का सत्य भी झूठ प्रतीत होता है। ३-बहित का सुधारना, बहित बैठने का नाम है, कुसंग में न बैठे क्योंकि यहाँ मद्य पान, स्त्री चरचा, अज्ञान, अभान, उपहास, दम्भ, बैर, पर निन्दा, निर्बन्धता निर्लज्जता, (द्यूत=जुआ खेलना) (चौर्य्य=चोरी करना) आदिक अनेक दोष को स्थित रहती है। ४-रहित रहने का नाम है=सो सदा निष्कलङ्क रहे वस्त्र सीधे सरल रक्खे, बहुत भूषण और पुष्प सुगन्धादि से सिङ्गार न करे क्योंकि यह स्त्रियों का धर्म है। ५-पुरीष कहिये मैला, बिष्ठा।

तन धोये से मल टरै, मन धोये अघ नाश।
तन मन को मल जब टरै, तब सुख होय प्रकाश॥ ८२
जगत समुद्र अगाध है, सुख दुख भोग तरङ्ग।
उपजत मिटत निज कर्म करि, यही नाश मति भङ्ग॥ ८३
सत रज तम यह तीन गुण, उपजैं तन के साथ।
भूल नाशि गुरु दृष्टि से, पुरुषार्थ तुम्हारे साथ॥ ८४
युगल दास है जीव को, दुख सुख बाको नाम।
एक रहत ठाढ़ो सदा, एक करत विश्राम॥ ८५
निशि बीते दिन होत है, दिन बीते निशि होय।
अवधि इसी में कट गई, कारज बने न कोय॥ ८६
खान पान सुख भोग में, पशु भी परम सुजान।
काह अधिकता मनुज की, जो नहिं निज को ज्ञान॥ ८७
त्रिय के हित से तजत ज़न, तन मन धन कुल लाज।
मन भी एक न देत है, निज के हेतु कुकाज॥ ८८
जो छीजत सुत नारि वित्त, जीव करत बहु शोक।
क्षण क्षण तन छीजत रहत, राखत ताहि न रोक॥ ८९
लोक वेद पशु गुरु पशु, त्रिया पशु ए चार।
साँच झूठ परखे बिना, चले परम्परा अनुसार॥ ९०
विद्या सत्य विवेक युत, बचन लेत जो मान।
गुरु मुख ताको जानिये, चतुर प्रवीन सुजान॥ ९१
जो मन माने सो करे, भये जो मन के दास।
ताहि मनो मुख जानिये, बुद्धि न आई पास॥ ९२

जब लो जड़ चेतन की, होत न दृढ़ पहिचान ।
निर्भय पद पावत नहीं, होत न संशय हान ॥ ९३
ताप पाप सन्देह हरे, सद्गुरु हैं कोई एक ।
तन मन धन हरि शिष्य को, गुरुवा मिलैं अनेक ॥ ९४
राग द्वेष से रहित हो, अरु स्वतन्त्र निर्बन्ध ।
निज स्वरूप की शान्तिता, जासे लहैं स्वच्छन्द ॥ ९५
ऐसो गुरु पद ज़ानिये, नहीं कल्पना कोय ।
माया भ्रम से रहित जो, निज पद कहिये सोय ॥ ९६
ऐसो पद जेहिं भाँति से, प्राप्त होय रे भाय ।
उसी भाँति से ठानिये, निज कर्तब्य कहाय ॥ ९७
निश दिन चिन्ता चाहिये, कैसे होऊँ शान्त ।
हानि लाभ की दृष्टि रखि, रहिये सदा एकान्त ॥ ९८
शान्ति रूप गुरु देव हो, निज स्वरूप में थीर ।
बार बार वन्दन करों, हरहु हमारी पीर ॥ ९९

(१०६ लपेट भजन बारह मासी चेतावनी)

भूलि पर्‍यों भ्रम जाल काल जग नाच नचावे ॥टेक॥ बैसाख मास लिह्यो गर्भ में बास, झूलैं ऊर्ध मुख नरक निबास ॥ बहुत दुख पावैं मन पछिताय, हे साहेब तुम लागो सहाय तो आय उबारो ॥ भूलि ॥ १ ॥ जेठ मास तन तपै शरीर तलफै मछली जस बिन नीर ॥ तलफि मरि जावे, कछ्छु न सोहाय । हे सद्गुरु तुमही सिरताज तो आय उबारो ॥भूलि॥२॥ असाढ़ मास

प्रगटे संसार, बीज बोबावत मोह किसान ॥ नेह बहु लावें, करि बहुत ध्यान, पीवत, दूध भये अज्ञान सुरति बिसरावें ॥भूलि॥३॥ सावन में जब भये सयाना, झलुवा परे भ्रम के डार झुलावत माया बहुत लोभान, मात पिता सङ्ग न भगवान नेह सब छूटे ॥ भूलि ॥४॥ भादौं में भरि आये काम, उनकी जवानी दूसर न आन ॥ माया मद माते नागिन नारि, सब जग लोचै धरि २ खाय गले लपटाये ॥ भूलि ॥ ५ ॥ क्वार मास बहु कार पसार, दुनियाँ दौलत माल खजाना, हाथी घोड़ा तम्बुवा कनात, बाजे डङ्का गगन घहराय, संग न जावे ॥भूलि॥६॥ कार्तिक में बहू नेम अचार, तीरथ ब्रत ब वेद विचार॥ भेद न पायें बिन गुरु ज्ञान, अविगत कै गति अगम अपार, पार न पावें ॥भूलि॥७॥ अगहन में बल ह्वैगे हीन, नीक बेकार परै न चीन्ह ॥ झूँठ बहु भाखैं धरम नशाय, साधू देखे मूड़ पिराय काल सिर गाजे ॥ भूलि ॥८॥ पूस मास में देह बुढ़ान, टूटे दाँत बाहिर मे कान ॥ देखि न पावें बोल न जाय, पकरि के रोवैं सुत औ नारि देखै जग धावें ॥ ॥भूलि॥ ९ ॥ माघ मास में परा तुसार, कालै घेरा दसौ द्वार ॥ भागि कहाँ जावौ चोर हमार, राम बिमुख भे रिपु के समान, बाँध यम लैहैं ॥ भूलि ॥१०॥ फागुन में लागी है आग, काया फूँक देंय सुत नारि ॥ जरैं अस होली मन पछिताय, फगुवा खेलै काल संग जायँ, नरक नहवावें ॥भूलि॥११॥ चैत मास में ऐसी हाल, काल पसारा सब जग जाल ॥ अज्ञानी जीव बाझे मोह के जाल, कहहिं कबीर यह जिव कै उबार परख ठहरायो॥भूलि १२

(१०७-भजन)

ऐसे गुरु मूरति की बलिहारी। बूड़त हंसा उबारी ॥टेक॥ गुरु दाता गुरु आप बिधाता परमारथ उपकारी। पारख ज्ञान स्वरूप दया निधि, पतित अनेकन तारी ॥ ऐसे ॥ १ ॥ गुरु महिमा नहिं कहैं शारदा शेष सहस्र मुख हारी। सो महिमा मैं कहौं कौन बिधि चक नहिं चलत हमारी ॥ ऐसे ॥ २ ॥ जो माया प्रचण्ड चहौं युग, दस औतार धरोरी। सो माया गुरु मूरति आगे, युग युग अज्ञा कारी ॥ ऐसे ॥ ३ ॥ चकमक पथरी रहै एक सङ्ग उठै नहीं चिनगारी। सो गुरु ज्ञान संयोग युक्त विन, होत नहीं उजियारी ॥ ऐसे ॥ ४ ॥ शूरा सोई लड़े रन भीतर, अगम पन्थ पगु धारी। कादर भये बचाव नहीं है काल कबहुँ नहिं छाड़ो ॥ ऐसे ॥ ५ ॥ जीता बाजी क्यों नर हारी, यह तेरो अवसर भारी। अबकी पारी चित चेत खेल, नर यहै तुम्हरो पारी ॥ ऐसे ॥ ६ ॥ चौपर खेल होत घट भीतर, खेलो खेल सम्हारी। मदन रूप घट भीतर दरशय, सोई है सुघर खेलारी ॥ ७ ॥

१०८-(प्रार्थना) ग़ज़ल।

मुझे ज्ञान अपना सुना दीजियेगा, मेरे पाप दिल से भुला दीजियेगा ॥ टेक ॥ भरी नीन्द सोता हूँ अज्ञान निश में, जरा ज्ञान शब्दों जगा दीजियेगा ॥ १ ॥ नहीं ज्ञान भक्ती है दिल में जरा भी, उसी बीज जड़ से जमा दीजियेगा ॥ २ ॥ सुना

सन्त होते हैं पतितों के पावन, मुझ पातकी को सुखी कीजियेगा ॥ ३ ॥ बड़े भाग्य से आज दर्शन हुये हैं, जो जाते हो फिर भी दरश दीजियेगा ॥ ४ ॥ हैं प्रेम दासानुदासों के किङ्कर, शरण आने की अब निबाह लीजियेगा ॥ ५ ॥

चचा चित्र रचो बड़ भारी । चित्र छोड़ तैं चेत चित्रकारी[१] ॥
जिन यह चित्र विचित्र ह्वै खेला । छित्र छोड़ि तैं चेत चितेला१ ॥
जेहि स्वभाव अतिशय है त्यागी । तेहिं व्यवहार भार सम लागी ॥

१०६-छन्द

॥ श्रीसद्गुरु पद बन्दना ॥

सद् रहस्य पूरण पारखी, श्री सद् गुरू शिर मौर हो ।
परिणाम दर्शी आप साहेब, दीन जीवन ठौर हो ॥ १
पूरण व काशी लाल साहेब, आप का पद पाय के ।
मुक्त जीवन हो गये, निज दास को अपनाय के ॥ २
खण्डवा-जिला में नाग झीरी, मठ कबीर है सही ।
अब शहर का नाम जानो, बुरहान पुर स्टेशन वही ॥ ३
एकान्त बासी जग उदासी, सत्य दाया को लिये ।
सहन समता शीलता, बिचार उर धारण किये ॥ ४
शान्ति हैं निज रूप में, हम जाय के दर्शन किये ।
सैन गुरु का लख लिया, गुरु रूप अपना कर लिये ॥ ५

टिप्पणी-१-चितेला कहिये, सत्य जीव अविनाशी अपना चैतन्य यस्वरूप ही है ।

दीपक बुझी सो जल गई, अज्ञान अन्धेरा हट गया।
ऐसे गुरु श्री लाल साहिब, शिष्य हम तिन के भया ॥ ६
सद्[1] रहस्य गुरू का सीखता, है शिष्य सोई जानिये।
है माँसु[2] पाँचो में फँसे, तिनको गुरु नहिं मानिये ॥ ७
नारी[3] नशा छोड़ा नहीं, उपदेश करते खूब हैं।
प्रत्यक्ष यम गुरुवा बने, बिन नीर [4] मरते डूब हैं ॥ ८
सत्संग में बूझा हुआ, सो मुख्य बातें कह दिया।
सज्जन वही गुण को गहै, सब दुष्टता[5] को नहिं लिया ॥ ९
अन्तिम विनय गुरु साधु से, त्रय बार साहेब बन्दगी।
क्षमिये मेरे अपराध को, जब तक रहे यह जिन्दगी ॥ १०
मस्त राम मुर्दा से पूछें, मुर्दा कुछ बतलावोगे।
मुर्दा में से मुर्दा बोला, मर जाओ तब पाओगे ॥ ११

अर्थ--नौकाल से रहित निज स्वरूप स्थित जीवन्मुक्त पुरुष को मुर्दा कहते हैं, नौकाल की सकल आशा में फँसना ही चौरासी का दुःख भोग को जिन्दा कहते हैं।

टिप्पणी—१--संयम नियम सहित, नौ काल से रहित स्वरूप पर शान्ति रहने का नाम सद् रहस्य है। २-जीव मार के माँस खाना, स्त्री भोग, कनक, चौथे सावजरूपी ब्रह्म ईश्वर पाचवें नौकाल की कल्पना आशा यहाँ पाँच माँस है सो जानिये। ३—नारी नशा कहिये स्त्री भोग, ब्रह्म ईश्वर अनुमान का नशा, तामसी अहार। ४—नीर कहिये ना चीज ईश्वर ब्रह्म भूत प्रेत कोई वस्तु नहीं तहाँ डूब मरे। ५--चोरी, हिंसा, व्यभिचार, ईर्षा, छलादि करना दुष्टता है।

फल रूप-छन्द

जेहि सन्त के उपदेश से, भ्रम जीव के सब छूटते ।
तेहि के पठन पाठन किये, सद्गुण सभी हैं जूटते ॥
निश दिन हर्ष सुख शान्ति प्रद, पारख परम पद पाय है ।
आवा गमन दुख ध्वंस हो, नहिं फेर जग में आय हैं ॥१॥

साखी--

प्रेम सहित जो पाठ करि, सुनि गुनि अर्थ बिचार ।
कर्म बचन मन शुद्ध तेहि, राग द्वेष सब क्षार ॥ २ ॥

छन्द--

बन्ध से मुक्ती करन, मुक्तावली यह नाम है ।
जेहिं के पढ़न औ गुनन से, मिलता सदा विश्राम है ॥
रामलाल यह निर्मित कर्ता, भेष साधू जानिये ।
शोधन करा इस ग्रन्थ को, अब सन्त द्वारा मानिये ॥

दोहा--

शोधि के सब ग्रन्थ को, सब जिज्ञासुन हेत ।
पढ़ि गुनि अर्थ बिचारि के, करो सुजन जन चेय ॥
इति मुक्तावली गारी नाम का ग्रन्थस्य सद्गुरु की दया से ।
साधु रामलाल दास द्वारा निर्मित ॥ सम्पूर्ण ॥ समाप्तम् ॥

मुद्रक—श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला, वाराणसी ।

कबीर पन्थी साधु रामलाल दास के बनाये हुये ग्रन्थों का नाम

१—गुरु चेला सम्बाद

२—व्याख्या सत्यासत्य निर्णय

३—कबीर पारख बूटी

४—गुरु चेला सम्बाद की चटनी

५—मुक्तावली गारी

६—बोध बयालिस

७—निर्पक्ष रत्नाकर सजिल्द

८—निर्पक्ष रत्नाकर अजिल्द

९—कबीर पारख बुटी, गुरु चेला सम्बाद की चटनी मुक्तावली गारी, बोधबयालिस चारो एक में सजिल्द